प्रतिभू

ठाकुर श्री श्री बालक ब्रह्मचारी महाराज

प्रतिभू

ठाकुर बालक ब्रह्मचारी महाराज के
घरेलू तत्व संकलन

लेक टाउन

बालक ब्रह्मचारी फाउंडेशन

लेक टाउन, कोलकाता

PRATIBHU
In-house Classes of
Thakur Sri Sri Balak Brahmachari Maharaj
Published by Lake Town Balak Brahmachari Foundation
944, Lake Town, Block-A
Kolkata – 700089

प्रकाशक : लेक टाउन बालक ब्रह्मचारी फाउंडेशन

९४४, लेक टाउन, ब्लॉक-ए

कोलकाता - ७०० ०८९

प्रथम प्रकाश : २०१५

द्वितीय प्रकाश : २०२१

तृतीय प्रकाश : २०२३

चतुर्थ प्रकाश : २०२५

© **ग्रन्थस्वत्त्वाधिकार संरक्षित**

मुद्रक :

मधुछन्दा रॉय

२२, पूर्वाचल, डानकुनी, हुगली, पश्चिम बंगाल – ७१२ ३११

শ্রদ্ধাঞ্জলি

प्राक्कथन

प्रकृति के स्वाभाविक नियम अनुसार जीव जगत में प्रत्येक के मध्य एक अद्‌भुत सादृश्य परिलक्षित की जाती है। प्रत्येक जीव संतान संतति के माध्यम से स्वयं की सृष्टि की धारा, कर्म की धारा को बिना किसी बाधा के निरंतर बढ़ाते रहना चाहता है। उद्भिद् सहस्र बीजों के माध्यम से उसके वंश की धारा को वहन करता रहता है। एक वृक्ष अपने स्वाभाविक नियम अनुसार फूल फल से भरपूर हो उठता है और बीज के माध्यम से अपने वंश का विस्तार करता है यही प्रकृति का नियम है। मगर यह सकल प्रक्रिया काफी समय और जोखिम सापेक्ष है। लेकिन इसी वृक्ष के एक शाखा को अगर अति सावधानी से बहुत अच्छी देखभाल करके उसमें मूल या जड़ उगाने में सहायता किया जाए, फिर अति सहजता से उस वृक्ष की समस्त विशेषताएँ इस शाखा में संचारित की जा सकती है। अत्यन्त अल्प समय में पूर्णत्व प्राप्त इस 'कलम' के पेड़ के माध्यम से इस वृक्ष की समस्त गुणावली अपरिवर्तित रखकर उसको नए प्रजन्म के बीच संरक्षित रखना सम्भव होता है।

परमपिता ठाकुर श्रीश्री बालक ब्रह्मचारी महाराज ने स्वयं के विषय में भी ऐसी ही एक व्यवस्था की बात विस्तारित रूप से वर्णना कर रखी है अपने कुछ महामूल्यवान घरेलु सम्भाषणों के माध्यम से। १९६७ साल में ठाकुर के द्वारा सम्भाषित वे समस्त अमुल्य घरेलु वक्तव्यों को लिपिबद्ध करनेवाले महानुभव श्री कालिदास बैनर्जी, शांति राय तथा कस्तुरी गुप्त को हम कृतज्ञ चित से स्मरण करते हैं। इस पुस्तक में बंगला में प्रकाशित 'प्रतिभु' पुस्तक के मूल उल्लेखनी को अविकृत रखते हुए उसका हिंदी में सटीक अनुवाद करने का यथा संभव प्रयास किया गया है। जिनके ऐकांतिक प्रयास से इन सकल तथ्यों का संरक्षण व पुनरुद्धार सम्भव हुआ है उन डॉ सोमलता चक्रवर्ती के प्रति हम अपना विशेष कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

सर्वोपरि, अपने भक्त-संतानों के प्रति उनके अनन्त माया के लिए उन परम करुणामय ठाकुर के चरणों में हम अपना सहस्र कोटी प्रणाम ज्ञापन करते हैं।

राम नारायण राम

155, Park Street,
२८ भाद्र, १३७४, रात्रि साढ़े ग्यारह

मन की बात तो सब खुलकर बोल ही नहीं पाता। जिस जगह से मैं आया हूँ, वहाँ की बात मन भरकर बोलने लायक तो कोई व्यक्ति ही नहीं पाता। मेरी बात यथार्थ भाव से समझ सके ऐसा कोई मिलता तो मुझे बहुत तृप्ति होती, तुम लोगों को भी सुविधा होती ऐसे किसी के साथ बात करके मेरे तत्वों को समझने में। अभी यही समझा हूँ कि, मुझे समझ सके ऐसा व्यक्ति मुझे ही तैयार कर लेना होगा। यहाँ पर ज़्यादातर बात जो मैं बोलता हूँ वह सब ही जिनके जिनके मात्रा अनुसार। कोई हो सकता है मूर्ति पूजा करना पसंद करता है, मेरे पास अनुमति मांगने आया — उसको बोला मूर्ति पूजा करो। और फिर अगले ही पल अन्य किसी को बोलता हूँ मूर्ति पूजा करके क्या होगा? उस दिन वृंदावन से श्यामा माँ के भक्त जो आए थे उन्होंने जब कृष्ण के संबंध में जानना चाहा उनको कृष्ण के महिमा के संबंध में कितना कुछ बताया। और वह जो क्या नाम है, चंदननगर या उसी तरफ रहता है, पार्टी करता है (कालिदास- राम चटर्जी की बात कर रहे हो?) हाँ, हाँ — राम चटर्जी ने मुझसे पूछा था कृष्ण के बोले गए गीता के उस श्लोक के संबंध में। यही जो युग युग में साधुओं की रक्षा करने आएँगे — अरे क्या था वह वाला श्लोक (कालिदास- यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत) हाँ, हाँ — इसी श्लोक के संपर्क में प्रश्न किया। मैंने उससे कहा — वेद के युग के बड़े बड़े ऋषिगण कृष्ण के समय में अगर रहते तो यह बात बोलने के लिए कृष्ण को चरम दंड देते, कारण यह श्लोक मनुष्य को दुर्बल बना देगा। मनुष्य के ऊपर जब अत्याचार होगा तब यदि वह उसका प्रतिवाद, प्रतिरोध ना करके कृष्ण के आशा में बैठे रहे तब तो मनुष्य दुर्बल हो जाएगा, समाज की संरचना ही टूट जाएगी। कृष्ण की आशा में बैठे रह रहकर ही समाज की आज यह दुरावस्था हो गई है। यदि कृष्ण इस तरह बोलते कि, जब अत्याचार होगा तब आप सबको हाथ के सामने हाता (करछी), खूंती (पलटा), जो मिले वही लेकर मैदान में उतर जाइए एवं इन्हीं हातावाला खूंतीवालाओ के साथ ही मैं रहूँगा, तो भी एक नंबर दिया जा सकता था। राम चटर्जी जाते समय यह बोलकर गया — आपके जैसा नास्तिक इस पृथ्वी में कोई दूसरा है या नहीं यह संदेह है।

समस्या शुरू होता है कब, जब बाहर जाकर राम चटर्जी के साथ वृंदावन से आए भक्तगण के बीच बात होगी। एकजन बोलेगा ठाकुर कृष्ण मानते हैं, दूसरा बोलेगा नहीं मानते। जो खुद को नास्तिक मानते हैं वे राम चटर्जी को बोले हुए कथोपकथन से खुश होंगे और जो ईश्वर विश्वासी हैं वे कृष्ण के महिमा की बात सुनकर आनंदित हो जाएंगे। इसी प्रकार कृष्ण अनुरागी जो हैं वे यदि गीता के श्लोक की व्याख्या की बात सुनेंगे तब वे मन ही मन खूब व्यथित होंगे और शायद कभी भी मेरे पास नहीं आएँगे। अब समझो मेरी परिस्थिति! इस प्रकार सभी का मन रखने के प्रयास में मेरे भीतर की असली चिंता जो क्या चल रही है वह और बोला नहीं जा रहा। फिर भी इतने प्रतिकूल परिस्थिति के मध्य भी जो निरंतर देकर जा रहा हूँ उसमें भी मेरे original चिंता भावना का विपुल आभास रह जा रहा है। (कालिदास- फिर तुम्हारे अंतर का पूर्ण परिचय हम किस प्रकार पाएंगे?) जो बीज तुम सबको दान किया गया है, वह बीज जिस दिन प्रस्फुटित होगा उस दिन तुम सब पहली बार उपलब्धि

करोगे कि तुम्हारे बाबा इतने दिन तुम सबके ताल से ताल मिलाकर चले हैं। किंतु होना उचित था इसका ठीक उल्टा, तुम सबको ही मेरे सुर से सुर मिलाते जाना चाहिए था। तुम्हारे भीतर से ही उस दिन ब्रह्म की वाणी प्रस्फुटित होगी। आज मैं थक चुका हूँ। धीरे धीरे जीवन रूपी सूर्य मध्य गगन से पश्चिम की ओर ढ़लना शुरू हो गया है। रात को सो नहीं पाता, मुझे बिठा कर रखते हैं। दो दिन पहले एक अद्‌भुत चीज़ देखा। मेरे लिए कुछ भी अद्‌भुत नहीं, तुम सबकी तरह बोलने के लिए मैंने अद्‌भुत शब्द का प्रयोग किया। रात को विश्वप्रकृति से एक अनुरोध आया। बचपन में जब काम पर बैठता था तब ऐसा कोई कोई आता था, अचानक देखता हूँ वे उस दिन हाज़िर हुए। आकर प्रणाम करके बोले — यदि आप खुश हों, तब आपके समक्ष एक अनुरोध है। आपके जैसा तीन जन को तैयार करना होगा। इतना बोलकर ही वे चले गए। (कालिदास- अगर थोड़ा समझाकर बोलोगे, तो हमें सुविधा होगी।) यह बात मेरे घराने की बात है, यह किसी के समझने के लिए नहीं। तुम लोग यह सब बात लेकर बाहर ज़्यादा आलोचना नहीं करना। क्योंकि समझ पक्का ना होने पर अनेक प्रकार के विभ्रांतिमूलक व्याख्या लोग स्वयं ही कर बैठते हैं। उस दिन नमिता ने आकर जानना चाहा मैंने अचल सेन को इस विश्व का प्रेसिडेंट बोला है कि नहीं! उस दिन नॉर्थ बंगाल से भी किसी ने चिट्ठी लिखकर इस प्रसंग में जानना चाहा। जहाँ कोई किसी को नहीं मानता वहाँ सांगठनिक श्रृंखला बनाए रखने के लिए मुझको बहुत कुछ बोलना पड़ता है। अब मैं यदि बोलूँ कि, यह बात मैंने नहीं बोला, तो कल से अचल सेन को कोई नहीं मानेगा। उपरांत बेहाला से आता है समीर, मुझसे कहा प्रेसिडेंट के पास रहने से वह बहुत उपकृत होगा। मैंने कहा — ठीक है। किसी के विश्वास पर मैं साधारणतः आघात नहीं करता। परंतु कोई यदि आंतरिक भाव से जानना चाहे तब बहुत समय कुछ कुछ बात खुलकर बोलता हूँ। मनुष्य अपनी चिंता के अनुसार मेरा विचार करता है — उस अनुसार उसके मन मुताबिक बात होने से खुश होता है, और थोड़ा अन्य प्रकार का कुछ सुनने से दुःख पाता है। किंतु मेरे मन के एकांत की बात कोई नहीं जानना चाहता, अपनी बुद्धि ही हमेशा प्रभावी होती चली जाती है। स्वयं ही कुछ एक समझकर तृप्ति लेकर चलते रहते हैं। कदाचित गलती पकड़ा देने पर और एक नया व्याख्या ले आकर उसके काम के समर्थन में युक्ति दिखाते हैं। किसी भी प्रकार वह सहज सरल स्वच्छ मन लेकर खड़े नहीं होना चाहते। मैं उस समझ पर हस्तक्षेप न करके अपेक्षा करता रहता हूँ उस बीज के प्रस्फुटित होने का, जिस दिन मेरे सच्चे मन की बात उसको ज्ञापन कर सकूँ। उस शिशु अवस्था से कितने कठिन पथ से जो मैं आगे बढ़ता रहा हूँ वह तुम सभी समझ भी नहीं पाओगे। शुगर की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाने के बाद से मैंने अनिमा शक्ति का प्रयोग करना एकदम ही बंद कर दिया। देह के जो कोष अत्यधिक ब्लड शुगर से आक्रांत हो गए हैं, रात के वक्त अनिमा शक्ति के द्वारा सूक्ष्म में विलीन हो जाने के बाद दोबारा जब देह form होता तो वही पहले वाले अणु नहीं रहते थे, अन्य अणुओं से देह गठित हो जाता था। कोटि कोटि अणु परमाणु द्वारा यह देह गठित है। एक अणु से दूसरे अणु का अंतर समझ पाना संभव नहीं। फलस्वरुप विलीन होने से पहले जो अणु थे, देहगठन होने के बाद देखा गया कि उनके स्थान पर अन्य अणु आ गए। नए कोष गठन होने के फलस्वरुप पुराने रोग और नहीं रहते थे। जिस दिन यह समझ में आया कि इसके कारण मेरे रिकॉर्ड में असुविधा हो सकती है, उस दिन से अनिमा का प्रयोग करना एकदम बंद कर दिया। अब मैं अन्य पद्धति का अवलंबन करता हूँ, स्वप्न में जिस प्रकार जाया जाता है उसी प्रकार करता हूँ। स्वप्न में जब बाहर जाया जाता है, तब देह वही पहले वाला ही पड़ा रहता है — नया देह

नहीं होता। (कालिदास- तुमने जो रिकॉर्ड की बात कही वह ठीक है या नहीं इसका विचार कौन कर रहा है?) मेरा विचार मुझे ही करना पड़ता है। इस विश्व ब्रह्मांड में जो जितना भी बड़ा क्यों न हो, उसका विचार करने के लिए उसके ऊपर कोई न कोई है। मेरा status ऐसा है कि विचार का दण्ड मेरे ऊपर छोड़ा हुआ है, मेरा विचार करने वाला कोई नहीं — इसलिए मेरा विचार मुझे ही करना पड़ता है। मेरा एक और क्षमता जो भी अन्य किसी का नहीं वह है कि मैं इस विश्व के क्षुद्र से क्षुद्रतम अथवा वृहत से वृहत्तम सर्वत्र सर्व स्थान पर, सर्व अवस्था में आधिपत्य कर सकता हूँ — जो खुशी कर सकता हूँ — उसके लिए मुझे किसी की जवाबदारी नहीं करनी पड़ती। यह क्षमता लेकर तुम्हारे ठाकुर यहाँ बैठे हैं और उधर कोर्ट में हाज़री देना पड़ रहा है जमीन हड़पने के केस में। पर किसी भी समय एक मुहुर्त के लिए भी अपनी सुविधा के लिए मैं अपनी कोई भी क्षमता का प्रयोग नहीं कर रहा। इतना कष्ट देखकर जगह जगह से विशाल विशाल महान अश्रुधारा बहा रहे हैं और बोल रहे हैं — आपको और कष्ट करने की ज़रूरत नहीं, आप चले आइए। जीवन में दो पैसा रोज़गार करने के लिए वृद्धों के सर से सफेद बाल निकालने से शुरू करके कपड़ा बेचना, रेडियो की दुकान लगाने से शुरु करके क्या नहीं किया पर एक मुहुर्त के लिए भी मेरे spiritual क्षमता का advantage कभी भी नहीं लिया। मेरा जिस कारण से यहाँ आना हुआ वही मेरे लिए सब कुछ है। विश्व के सब महानों के अनुरोध पर मेरा आना हुआ। बीज के अन्दर वृक्ष के रूप में पूर्णतया विकसित होने की क्षमता है, प्रत्येक बीज में ही यह क्षमता है। विश्व ब्रह्मांड का बीज है जीव। जीव के अन्दर बीजाकार में इस विश्व की पूर्ण क्षमता की संभावना स्थित है। पूर्ण क्षमता की सम्भावना स्थित होने के उपरान्त भी उस चरमतम पूर्णता के स्थान पर कोई पहुँच नहीं पा रहा। कोई शायद 99% कर चुका है, कोई और भी ज़्यादा 99.99% तक, कोई शायद और भी सूक्ष्म में पहुँच गया पर कोई भी पूर्ण 100-तक reach नहीं कर पा रहा। तब मेरे पास अनुरोध आया आप क्या एकबार birth लेंगे, तब हम शायद यह समझ सकें कि किसी और के लिए पूर्णता पर पहुँचना सम्भव क्यों नहीं हो रहा। जन्मग्रहण करने से पहले मेरे पास दो अनुरोध रखा गया था — १) मेरा पूर्ण क्षमता मैं व्यवहार कर पाउँगा। २) कहाँ जन्मग्रहण करूँगा उस विषय पर मेरा चयन करने का अधिकार रहेगा। मैं दोनों अनुरोधों को ही अस्वीकार करके उतर पड़ा। मेरा कोई क्षमता ही मेरे साथ मैंने नहीं रखा। जितना भी विभूति तुम सभी देखते हो वह मेरे साथ साथ हाथ पाँव की तरह थोड़े बहुत रह गए हैं। जब ट्रेन आती है तो उसके चारों ओर तूफान जैसी हवा चलने लगती है, तो क्या उसके लिए यह कहना होगा कि ट्रेन जानबूझकर हवा को लेकर आई है! ऐसा नहीं, ट्रेन के गति के साथ साथ हवा स्वतः आ जाती है। मेरी क्षमताएँ भी उसी प्रकार — मेरे इच्छाकृत लाए गए नहीं, बस ऐसे ही जितने भी आ गए हैं — उसी से देखो कितना है! बस इस काम के लिए ही मेरा आना हुआ, अन्य और जो कुछ देखते हो वह सब ही यहाँ के नियम कानून अनुसार चलने की सुविधा के लिए मुझे करना पड़ता है। (कालीदास- तुम्हारे स्थान पर अन्य कोई किसी दिन आ नहीं पाएगा?) यह मैं क्यों बोलूँगा। वैसे इतने अनन्त कोटि वर्षों में जो कोई नहीं आया यह तो तुम सब जान पाए। मेरे स्वयं के मुख से यह बात सुनने के लिए विशेष भाग्य लगता है। इस स्थान पर एकमात्र मेरे संतानों में से ही कोई कोई शायद आ पाएगा, मगर वह भी मेरे खुशी के ऊपर निर्भर करेगा। इसीलिए ही शायद तीन जन मेरे जैसे को तैयार करने का अनुरोध प्रकृति की ओर से आया है। जानता नहीं होगा कि नहीं, कारण कब कौन सी परिस्थिति के भीतर से गुज़रना पड़े। यदि किसी को तैयार कर पाया, तभी समझा जाएगा। वैसे प्रकृति जो यह चाह रही है,

यह संकेत मेरे ४५ वर्ष पूर्ण करने के बाद से ही आ रहा था। (कालीदास- हम सभी तो तुम्हारे मन अनुसार तैयार होना चाहते हैं।) 6C — के घर पर रहते समय डॉ. हरिहर गांगुली मुझसे मिलने आया और बोला, क्या आपको कभी कोई समझ पाएगा? गुरु स्वयं भी अनेक समय यह नहीं जानता कि कौन उनका घराना वहन करेगा। इनायत खाँ का अधिक उम्र का पुत्र था विलायत। इसके परिणामस्वरूप विलायत पर अधिक ध्यान नहीं दे पाया। मास्टर पानू या ऐसे किसी एकजन को सिखाने का, क्या नाम था उसका — श्याम विनोद जानता है — उसे सिखाने के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया, लेकिन किसी भी तरह कुछ भी सिखा नहीं पाया। किन्तु इनायत के मृत्यु के बाद जो शोकसभा हुई, वहाँ नन्हें विलायत के यंत्र में दिया टोका (वीणा के तार को छेड़ने का तरंग) सुनकर कोई एक उस्ताद अपने कुर्सी को छोड़कर उठ खड़े हुए (और बोल पड़े) — अरे ये तो एकदम ही इनायत का टोका है! गुरु की दृष्टि सब समय सभी शिष्यों के प्रति एक समान हो ऐसा भी नहीं है। मान लो दो शिष्यों को गुरु ने एक ही साथ एक ही आदेश दिया। दोनों में से कोई भी उस आदेश का पालन नहीं कर पाया। असफल होकर दोनों शिष्य जब गुरु के सामने उपस्थित हुए तब गुरु के मन में दो प्रकार का भाव उत्पन्न हुआ। प्रथम शिष्य की ओर देखकर गुरु के मन को कहीं थोड़ा कष्ट पहुँचा, इतना सिखाया इतना परिश्रम किया फिर भी सीख नहीं पाया! उसके स्थान पर अन्य किसी के पीछे मैं यही परिश्रम करता तो वह निश्चय अच्छा कर पाता। दूसरी ओर द्वितीय शिष्य के तरफ देखकर गुरु के मन में आया — उसने तो उसके साध्यानुसार परिश्रम किया है, निश्चय मेरे ही सिखाने में कहीं गलती रह गई, यदि थोड़ा और समय दे पाता तो निश्चय ही वह सफल होता। उसका कोई दोष नहीं, मैं ही उपयुक्त अवसर की व्यवस्था नहीं कर पाया। यह जो द्वितीय शिष्य है साधारणतः वही गुरु का घराना प्राप्त करता है। यह चिंता हर समय स्वयं गुरु के हाथ में रहता है — ऐसा भी नहीं। बहुत सारे factor के ऊपर सब कुछ निर्भर करेगा। उसका चलना बोलना, परिवार की असम्मति है या नहीं, क्योंकि पास में रखकर तैयार करने की जो सुविधा मिलती है, दूर होने से थोड़ी असुविधा हो सकती है। यद्यपि यह प्रतीत होता है प्रकृति से ही जब अनुरोध आया है, प्रकृति से ही किसी को शायद मेरे पास भेजा जाएगा। मुझे स्वयं चुनने में असुविधा होगी, क्योंकि मेरा माया इतना ज़्यादा है कि चुनाव करना मेरे लिए कठिन होगा। प्रकृति से भेजा गया तो मेरे चुनाव करने का कोई दायित्व नहीं रहा, किसी का कुछ बोलने को भी नहीं रहा। (कालीदास- तीनों जनों को ही क्या प्रकृति भेजेगी?) मैं यह कैसे बोलूँ? तीन भी हो सकता है, एक भी हो सकता है और कोई भी न हो ऐसा भी हो सकता है। यहाँ कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं, सब ही मेरे पुर्ण खुशी के ऊपर निर्भर करेगा। यदि हो तो प्रकृति के कार्य के लिए इससे बहुत सुविधा होगी इतना कह सकता हूँ। (कालीदास- तुम्हारे जो इतने शिष्य हैं, वे भी तो तुम्हारे संतान हैं। तो फिर वे भी तो स्वाभाविक नियम से पिता की संपत्ति पाएंगे।) मैंने जो तुम सबको संतान बनाया है यह तुम्हारे उद्धार के लिए है। तुम सबके यहाँ की मात्रा और मेरे मात्रा के बीच का अंतर तुम इस मुहूर्त धारणा में भी नहीं ला पा रहे। जो चले गए हैं, वे सब अभी थोड़ा समझ पा रहे हैं। अश्विनी चैटर्जी मुंशीगंज में मृत्यु के समय बोले — ठाकुर! तुम कहाँ और हम कहाँ, आश्चर्यचकित हूँ तुम्हारे साथ हमारी मुलाकात हुई कैसे? अश्विनी जाते समय स्वामीबाग के घर पर मेरे साथ मिलकर गया। रवि घोष और महम्मद आली तब मेरे सामने खड़े थे, लेकिन उन्होंने भी अश्विनी को देखकर सोचा कि अश्विनी ऐसे ही मुझसे मिलने आया है। बाद में शाम को मुंशीगंज से जब सूचना मिली तब समझे। अत्यन्त साधारणों की तरह तुम सबसे मैं मिलता जुलता हूँ इसलिए तुम

सब अभी मुझको समझ नहीं पा रहे। फलस्वरूप यह बीज पूर्ण रूप से प्रस्फुटित होने में बहुत दिन लग जाएगा। मृत्यु के बाद और एक अवस्था में तुम सबको ले जाया जाएगा, वहाँ पर फिर और भी ऊँचाई पर प्रस्फुटित होने का पथ बता दिया जाएगा। इस प्रकार चलते चलते कब उस पूर्ण अवस्था तक पहुँच पाओगे इस मुहुर्त में यह बोल पाना कठिन है। यहाँ पर ही ऐसे अनेक बीज हैं जैसे की ताल वृक्ष — जो एकजन रोपण करने पर तीन चार पीढ़ी बाद फल पाता है। फलस्वरूप बीज से प्रस्फुटित होने की प्रक्रिया दीर्घ समय की बात है। उपरन्तु प्रस्फुटित होने के बाद ठीक से पानी देना, खाद देना — यह सब तो करते ही रहना पड़ता है। उसके बाद फिर शायद देखा गया यदि थोड़ा अंकुरित होकर बाहर आ भी गया — तो भी फिर से कोई गाय या बकरी आकर उसे खा गई। उसके लिए बाड़ लगाकर सुरक्षा की व्यवस्था की गई। सब कुछ करके भी यह देखा गया ऐसी एक ज़ोर की आँधी आई, पेड़ टूट गया। यह सब करके फल देते देते बहुत देर हो जाती है। किन्तु कलम का पेड़ बहुत कम दिनों के अन्दर ही परिणति प्राप्त करता है, क्योंकि direct उस वृक्ष का अंश उसके अंदर होता है। एक संतान किया जा रहा है उद्धार की व्यवस्था करने के लिए, साथ ही साथ उसको जितना हो सके तैयार किया जाए। और एक है केवलमात्र तैयार करने की चिंता से कार्य करना। कलम का पेड़ जिस प्रकार तैयार किया जाता है उसी प्रकार अगर किसी को तैयार कर पाया, तब वह बहुत द्रुतगति से मेरे ज्ञान को समझ पाएगा। बीज से पेड़ तैयार करने में जहाँ बहुत दिन लग जाता है, कलम के पेड़ के क्षेत्र में लेकिन उससे बहुत कम समय के अंदर वह प्रस्फुटित हो पाएगा। जैसे सीढ़ी से उठना और लिफ्ट से उठना। सीढ़ी से जो उठ रहा है उसको कितना कष्ट करके उठना पड़ रहा है, हार्ट का पेशन्ट हुआ तो रास्ते के बीच में मृत्यु तक हो सकती है। किन्तु लिफ्ट से जो उठ रहा है वह कुछ सेकेन्ड के अंदर ५०वीं मंज़िल तक चला जाएगा। सीढ़ी से जो उठ रहा है वह प्रत्येक मंज़िल का खबर लेते लेते उठेगा और लिफ्ट से उठनेवाले व्यक्ति के पास निम्नतम मंज़िल और ५०वीं मंज़िल की खबर रहेगी — अन्य किसी मंज़िल की खबर नहीं रहेगी। कलम के पेड़ जो हैं वे इस लिफ्ट से उठनेवाले व्यक्ति के जैसे हैं क्योंकि उनकी speed अन्यों से बहुत ही ज़्यादा है वे मुझको तब काफी ज़्यादा समझ पाएंगे। जो जो stage से pass करने में बहुत समय लग जाता है वह सब stage वे बड़ी आसानी से खूब कम समय में pass करके चले जाएँगे। इस विश्व में मेरी गति अत्यन्त ज़्यादा होने के कारण मेरे साथ ताल मिलाकर रखनेवाले व्यक्ति का बड़ा अभाव है। शायद इसीलिए विश्वप्रकृति से इस कलम के पेड़ का अनुरोध आया है। लेकिन मैं भी यह प्रकृति के ऊपर ही छोड़कर बैठा हूँ। प्रकृति से किसी को अवश्य ही भेजा जाएगा। लेकिन सब कुछ ही निर्भर करेगा मेरे खुशी के ऊपर। यह ज़ोर करके करनेवाली चीज़ नहीं, एकमात्र खुश रहने पर ही मैं कर सकता हूँ। तब मेरा तत्व उसके अंदर से reflected होगा। मगर बीज से क्या नहीं होगा? निश्चय होगा। मेरा कोई भी बीज अकारण नष्ट नहीं होगा, सब बीज ही प्रस्फुटित होगा। यह चिंता लेकर ही तो मैंने दिक्षा दी है। लेकिन बीज से पूर्ण वृक्ष विकसित होने में काफी समय लग रहा है इसीलिए प्रकृति की ओर से यह कलम का विचार किया गया।

राम नारायण राम

155, Park Street

२ अश्विन, १३७४, 19th Sept, 1967

उस दिन जो कलम के पेड़ को लेकर आलोचना कर रहा था, आज देखता हूँ धीरेन घोष आकर पूछ रहा है उस दिन के बातों के बारे में। यह बात मेरा संपूर्ण व्यक्तिगत बात है, यह बाहर जाकर बतानेवाली बात नहीं। मैंने मेरा आध्यात्मिक परिचय कभी भी बाहर उजागर होने देना नहीं चाहा। मैं पृथ्वि पर आया हूँ संपूर्ण मेरे व्यक्तिगत कार्य के लिए। मेरा काम complete करके, अपना record ठीक रखकर जिससे मैं चले जा पाऊँ यही मेरा एकमात्र लक्ष्य है। जाते समय मैं अपनी खुशी से बहुत ले जा पाउँगा, यहाँ तक कि मैं अपने पास भी रख ले पाउँगा — यह स्वाधीनता Universe के तरफ से मुझे दिया हुआ है। यह स्वाधीनता मुझे दिया हुआ है इसीलिए मैं इसका प्रयोग करूँगा ऐसा भी नहीं। एकमात्र प्रयोग कर पाउँगा यदि मैं किसी के ऊपर सम्पूर्ण रूप से खुश रहूँ। अभी मैं कठिन कानून के मध्य चल रहा हूँ। स्वयं की सुविधा के लिए मैं अति सामान्य क्षमता का भी प्रयोग नहीं करता। इस जगत में मेरे नाम पर चारों ओर कितनी बदनामी है, बचपन से कितने अपवाद, अपमान, लांछना के मध्य से गुज़रना पड़ा — उससे मुझे कुछ आता जाता नहीं। आएगा जाएगा तभी यदि मेरे सुख्याती के लिए मैं मेरे क्षमता का अपव्यवहार करूँ — तभी एकमात्र मेरे record में spot पड़ेगा। सामान्य ७०-८० वर्ष के मोह में पड़कर मेरे अनन्त वर्षों के इतने सुन्दर record को मैं नष्ट होने नहीं दे सकता। इससे तुम यदि मुझे गलत समझो मेरा कुछ करने का नहीं। आज गलत समझ भी लो तो जिस दिन यहाँ से चले जाओगे उस दिन समझ पाओगे मैं क्या उद्देश्य लेकर कार्य करता गया। यही तो कुछ दिन पहले द्विजेन चक्रवर्ती मारा गया — किस दिन मारा गया (कुसुमदी- १६ तारीख) हाँ, मैं शमशान गया था। उसका बेटा जब मरणापन्न था, मेरे पास कृष्णनगर में गया था — मैंने उसके प्राणों की रक्षा की थी। उस लड़के ने एम एस सी पास कर लिया। द्विजेन रोज आकर मुझे गाना सुनाता था। (कुसुमदी- बहुत अच्छा गाना गाता था, उसके पिता भी गाना गाते थे।) यदि अब द्विजेन आकर तुम्हारे सामने खड़ा हो तो वह बोलेगा — इतने दिन वह ठाकूर को जितना समझ पाया था, ठाकूर उससे भी कितने ज़्यादा बड़े हैं यह वो अब समझ पा रहा है। मैं तो उस जगत की बात अधिक नहीं बोलता, यहाँ के सामाजिक परिवेश और तुम सब के कार्यों के दबाव में यह पहलू एक प्रकार ढका ही रहता है। किन्तु प्रकृति की ओर से बार बार यह अनुरोध आ रहा है ताकि मैं यह विषय लेकर भी थोड़ा सोच विचार करूँ। बचपन में जब हिमालय की ओर थोड़ा आवागमन था, तब कुछ कुछ कार्य किया गया। पहाड़ों में अभी भी बहुत बड़े कुछ साधक हैं। वे मेरे पास आ नहीं पाते। मैं जो आया हूँ, प्रकृति की ओर से एक निर्दिष्ट मात्रा छोड़ दिया गया हैं, मान लो चार आना — इस चार आना मात्रा के अन्दर जो हैं वे ही मेरे सान्निध्य में आ पाएंगे। इससे ऊँचे मात्रा में जो हैं वे नहीं आ पाएंगे। (कालीदास- हमारी मात्रा फिर तो चार आना है।) चार आना बातों की बात कही, समझने के सुविधा के लिए। अब इस चार आना मात्रा के ऊपर जो हैं, वे मुझे समझ पा रहे हैं लेकिन मेरे पास तुम्हारे तरह आ नहीं पा रहे, क्योंकि प्रकृति के कानून में कहा गया है मैं जितने दिन शरीर लेकर इस पृथ्वी पर रहूँगा उतने दिन चार आना मात्रा के ऊपर कोई मेरे सान्निध्य में आ नहीं पाएगा। यह जो लोकनाथ ब्रह्मचारी ने अश्विनी को अर्ध मंत्र दीक्षा दिया था यह

और कुछ नहीं, क्योंकि लोकनाथ और त्रैलंग यह जान पाए थे कि एक पूर्ण क्षमता के अधिकारी महान इस पृथ्वी पर अवतरित होने वाले हैं। वे जिस मात्रा पर हैं वह तुम से बहुत ऊँचा होने के कारण वे मेरे पास आ नहीं पाएंगे, इसीलिए अश्विनी के माध्यम से एक संपर्क रखा। अश्विनी देहत्याग के पश्चात् मेरे साथ स्वामीबाग के निवास में मिलकर बोला कि लोकनाथ बाबा और दादू आए थे, आपको प्रणाम भेजा। क्योंकि त्रैलंग लोकनाथ का गुरु था इसलिए अश्विनी त्रैलंग को दादू बुलाता था। उस वक्त रवि घोष और महम्मद आलि मेरे सामने खड़े थे — उन्होंने भी सुना ये बात। मैं यह तय करके आया हूँ कि इस चार आना मात्रा के बाहर नहीं देखूँगा, इसीलिए इस सामाजिक परिवेश में कोर्ट केस, तुम्हारे मान अभिमान सब सहन करता चल रहा हूँ। तो फिर ये ऊँचे मात्रा में जो हैं, जो मुझे काफी समझ पा रहे हैं, उनके और भी उन्नति की क्या व्यवस्था किया जाए इस चिन्ता से ही शायद कलम के पेड़ का विचार आया है। जो भगवान बनकर पूर्ण क्षमता लेकर आते हैं, वे ही इस विश्व विराट के प्रतीक हैं। विराट को लेकर ही उनका समस्त लीला, खेल और कर्म है। इस विशाल विश्व ब्रह्मांड के एकमात्र भाग्य नियन्ता उन्हीं को बोला जा सकता है। सर्व स्थान और काल व्यापी उन्हीं का अवस्थान है, इसीलिए कोई निर्दिष्ट सीमा में वे नहीं, वे सर्वत्र विराजमान हैं। इस पृथ्वी पर अविर्भूत होने के लिए उन्हें एक सीमा के भीतर आना पड़ता है। समाज और परिवेश से सामंजस्य रखकर उनको चलना पड़ता है एवं स्वयं को समायोजित करना पड़ता है। जैसे शीत प्रधान प्रदेश दार्जिलिंग में शीत वस्त्र आवश्यक है, उनको भी इसलिए वहाँ पर शीत वस्त्र परिधान करना पड़ता है। विश्वप्रकृति के समस्त विधान ही उनके परिचालनाधीन हैं — कानून जो बनाते हैं उनको भी वह कानून अनुसार चलना पड़ता है। विराट को जो परिचालित करते हैं — उन्हीं के नियंत्रण में जब सब कुछ चलता है, तब प्रश्न आ सकता है कि उन्हें इस पृथ्वी पर आविर्भूत होने की क्या ज़रूरत? विराट का तो अति सामान्य अंश है यह पृथ्वि। जन्मसिद्ध जो हैं वे आते हैं विराट के कार्य के लिए । साधारणतः मनुष्य की जो आयु है उतने ही समय वे इस पृथ्वी पर अवस्थान करके कार्य करके चले जाते हैं। यह सामान्य समय — ६०/७०/८० वर्ष — कार्य की तुलना में अत्यन्त कम समय है। इस समय सीमा के अन्दर जितना ज़्यादा किया जा सकता है उतना कार्य वे करके जाते हैं। मान लो ४० लाख शिष्य बनाया। उनको कार्य देकर, उनको कार्य करने का अवसर और सुविधा प्रदान करते हैं ताकि वे विराट के कार्य के उपयुक्त बनकर विराट का कार्य करते जाएँ। वे विराट स्वयं भगवान हैं — सम्पूर्ण स्वयं कि खुशी से नरदेह में आविर्भूत हुए हैं। उनके दिक्षा देने मात्र से जन्म मृत्यु के चक्र में पड़ना नहीं पड़ता। इसका मतलब यह नहीं कि उनके भक्त शिष्यों का कार्य समाप्त हो जाता है। यह पृथ्वी तो एक stage मात्र है। यह stage होकर वे different stage में जाते हैं विराट के कार्य के लिए। इन ४० लाख शिष्यों में से पुनः वे चुन चुन कर अपनी खुशी अनुसार कुछ को sanction दे जाते हैं — मान लो १० हज़ार — वे sanction world में जाते हैं। लिपिबद्ध है, २१ हज़ार कोटी जन्म प्रतिदिन २१ घंटा करके साधना करने का जो फल होता है, sanction पाने से इसका अधिकारी बना जा सकता है। स्पष्टतः देखा जाए तो गुरुप्रदत्त ध्यान में मग्न रहने पर भी एक जीवन में sanction पाने लायक कार्य कुछ भी नहीं होता। यह सम्पूर्ण रूप से निर्भर करता है गुरु के Sweet Will के ऊपर, केवल मात्र प्रेम के शक्ति के आधार पर वे sanction दे पाते हैं। Sanction देते समय जो वे शिष्यों के कार्यकलापों का विचार विश्लेषण करके देते हैं — हर समय ऐसा नहीं। एकदम whimsical घटना है। खुश हुए — दे दिया। गुरु का प्रेम पाने के लिए बहुत ज़्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता यदि

गुरु के प्रति थोड़ा सा भक्ति और प्रेम हो तो। इसके लिए बोले तो कोई कष्ट करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। (कालीदास- तुम जो कलम के पेड़ की बात कर रहे हो, वह क्या यह sanction पाने जैसी बात है?) नहीं, ठीक वैसा नहीं। Sanction जो पा रहे हैं वे मेरे शिष्यों के बीच से ही कोई कोई पा रहे हैं। वही जो पहले ही बताया जन्मगत चार आना मात्रा के अन्दर ही वे होंगे। किन्तु प्रकृति की ओर से जिस कलम के पेड़ की बात बोली जा रही है क्योंकि उसको प्रकृति से ही भेजा जाएगा इसलिए उसकी जन्मगत मात्रा चार आना के ऊपर भी हो सकता है, और नहीं भी हो सकता — यह मेरे देखने का विषय नहीं। एक है उद्धार करने की चिंता करके, और एक प्रकृति के विराट कार्य में सहयोगिता करने की बात चिंता करके। (कालिदास- हमारे बीच कोई क्या ऐसा है?) यह मेरे बोलने की बात नहीं। शायद अभी भी उसने पृथ्वि पर जन्मग्रहण ही नहीं किया। मैं तो सीधे तौर पर कभी कुछ नहीं बोलता। शत आवरणों के बीच मैं छुपना चाहता हूँ। यह पृथ्वी एक हाट जैसा है, जहाँ सब प्रकार के मनुष्य आते जाते हैं। हाट में गरीब भी जाते हैं और अमीर भी जाते हैं। हाट में सभी के साथ सभी का मुलाकात होता है। राजा भी कई बार शौख से हाट देखने आता है। तब बहुतों के साथ राजा का मुलाकात हो सकता है। हाट से लौटते समय राजा इच्छा हो तो किसी गरीब इंसान को अपने साथ ले भी जा सकता है, उसके राजमहल में कोई काम देकर उसको हमेशा के लिए रख भी ले सकता है। जो कल तक भूखा था, देखा गया हाट में राजा के साथ मुलाकात होने के कारण अब वह राजमहल में विशाल प्राचुर्य के बीच में है। कब क्या हो, कुछ भी नहीं बोला जा सकता। हाट में जाकर मुझे तो यह बताने की ज़रूरत नहीं मैं कौन हूँ या कहाँ से आया हूँ! तथापि कोई यदि मेरा चलना बोलना देखकर मुझे समझ ले तो यह उसका व्यक्तिगत विषय है — मैं तो उसको समझाना नहीं चाहता। राजा ने जो किसी को ले जाकर अपने महल में रख दिया, ऐसा करने के लिए वह बाध्य नहीं, ऐसा उसने अपने ख्याल खुशी से किया। वैसा उसके संपूर्ण खुद की खुशी से किया, वहाँ कोई भी बाध्यबाधकता नहीं। यह न करने पर भी राजा को किसी के समक्ष जवाबदेही नहीं करनी पड़ती। Sanction जो पा रहे हैं वे इस श्रेणी के हैं। कलम का पेड़ जो होगा वह शायद राजा के घराने को आगे वहन करके ले जाएगा। जन्म से मैं जो सहज सरल घराना लेकर आया हूँ, उस सुन्दर घराने का आभास यहाँ नहीं देख पाता। ज़्यादातर लोग अपने अपने भावना के अनुसार मेरे तत्व की व्याख्या करते हैं एवं उसके बाद वही व्याख्या ठाकुर की वाणी बोलकर बाज़ार में चालु करते हैं। मैं किसी के सम्मान पर आधात नहीं करता। बलू बिशु के केस के समय राय के क्वार्टर में अचल सेन को बोला था — मेरे हाथ में कुछ भी नहीं, तुम लोग जो कर सको करो, मैं अपने लिए कुछ भी नहीं कर सकता। यह बात अचल सेन के वहाँ पर आलोचित हुआ कि, ठाकुर ने जब अचल सेन से सहायता मांगी तो अचल सेन कितना बड़ा महापुरुष है! मैंने तो ठीक उस अर्थ में बात नहीं बोली। जब मैं छोटा था तब भूख लगने पर रसोई के सामने जाकर माँ को बोलता था कुछ खाने को देने के लिए। ठीक वैसा ही मन लेकर, संतान ज्ञान से मैंने वह बात बोला था। यहाँ पर महापुरुष अथवा अन्य कुछ की बात आ क्यों रही है? मैं जिस तरह सहज सरल मन लेकर तुम्हारे साथ मेलजोल करता हूँ, उससे तो मुझे समझने में कोई असुविधा होने की बात नहीं। शिशु वयस से ही अनेक कष्टों के मध्य से मैं गुज़रा हूँ। किन्तु कभी भी मेरा spiritual advantage मैंने नहीं लिया, इसलिए मेरा record अभी भी बहुत अच्छा है। रात्री के समय प्रकृति मुझे बिठाकर रखती है और बोलती है — तुम जो इनके पीछे इतना परिश्रम कर रहे हो, ये तो तुम्हें समझ नहीं पा रहे! मैं बोलता हूँ — मैं मेरे अपने मन में, हृदय के

अन्तस्थल से अगाध प्रेम देकर, निःस्वार्थ भाव से अपना कार्य करता जा रहा हूँ। किसी के काम में आ रहा है या नहीं यह देखने जाऊँ तो भी स्वार्थ का एक गंध आ सकता है, इसलिए उस ओर मैं नहीं देख रहा। मैं केवल मेरे अपने मन में जन्म से जो सुर लेकर आया हूँ वही सुर बजाता जा रहा हूँ। १५ साल की उम्र में जिस बार पहाड़ पर गया था, उस समय पहाड़ के एक अपूर्व स्थान में एक पक्षी का गाना सुना था। क्या अपूर्व था वह संगीत! मेरे साथ उस बार सरिषाचर का अमल था। उसको बोला ऐसा पक्षी का गीत कहीं सुना है! अमल भी बेहद हैरान होकर सुन रहा है। क्या अपूर्व था वह सुर — शब्दों में वर्णन किया नहीं जा सकता। चारों ओर देखा तो पाया कि हम ही केवल वहाँ थे अन्य कोई नहीं। वह पक्षी जब गाना गा रहा था कोई उसका गाना सुन रहा है या नहीं यह सोचकर क्या वह सुर लगा रहा था? ऐसा तो नहीं। वह उसके अपने मन में विभोर होकर गा रहा था — किसी के काम आया या नहीं, किसी ने प्रशंसा किया या नहीं इतना सब सोचकर वह उसका गाना नहीं गा रहा था। मेघ जो कड़कते हैं, समुद्र जो गरजता है और पवन जो शोर करती है, क्या वे यह सोचकर ऐसा करते हैं कि जब कोई हमारी प्रशंसा नहीं कर रहा तो हम काम नहीं करेंगे। ऐसा तो करते नहीं! मैं भी ठीक वही मन लेकर अपना काम करता जा रहा हूँ। हो सकता है मेरे इस मन को यहाँ टिकाने के लिए ही शायद प्रकृति से इस कलम के पेड़ को भेजने की चिंता की गई। पहाड़ों पर जाकर देखा है अभी भी कुछ बड़े बड़े साधक हैं — साधना किये जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस जगत से आया हूँ वहाँ का संदेश अभी भी उनके लिए अज्ञात है। आसपास जो सब ग्रह हैं, उनकी तुलना में वे बहुत आगे बढ़ जाने के बावजूद, और भी आगे जाने का रास्ता स्पष्ट होकर उनके पकड़ में नहीं आ रहा। मेरे पृथ्वी पर आने से योगियों के बीच बहुत अमीर अचानक गरीब हो गए। उजानचर में जब था तब वहाँ श्याम के घर पर मेरा आना जाना था। (कालिदास- अमलेन्दु श्याम की बात बोल रहे हो?) हाँ। श्याम लोग मेरी नज़र में बहुत धनी थे। मेरे पिताजी का रोज़गार बहुत ज़्यादा नहीं था, उसके ऊपर काछारी घर से जो वेतन मिलता था उसका एक अंश मेदिनिमंडल में भेजना पड़ता था। बचपन गरीबी में गुज़ारना पड़ा। श्याम लोग अमीर थे — बड़े बड़े पात्र में चावल का मुरमुरा, चिवड़ा भरा रहता था। मेरी नज़र में श्याम लोग तब सबसे ज़्यादा अमीर थे। मेरे पिताजी के साथ काम करते थे आशु सेन, मैं उन्हें ज्येठामशाई बुलाता था। ज्येठामशाई मुझे पहली बार ढाका शहर में ले गए। ढाका शहर पहुँचकर नवाब का घर देखकर तो मैं आश्चर्यचकित हो गया! यह समझा ये लोग श्याम से कहीं ज़्यादा अमीर हैं। इस घर के कई साधारण कर्मचारियों के ही धन का परिमाण श्याम लोगों से बहुत ज़्यादा है। उस मुहूर्त समझ में आया जिनको मैं सबसे ज़्यादा धनी व्यक्ति समझा था, उनसे भी बहुत ज़्यादा धनी मौजूद हैं। ठीक उसी तरह आसपास के ग्रहों की तुलना में जो सब योगी बहुत ज़्यादा अमीर थे, मेरे पृथ्वि पर आने से ऐसे एक जगत का संदेश आ पहुँचा जिसके फलस्वरूप वे सब योगी एक ही पल में बहुत गरीब हो गए। दूसरी कक्षा की तुलना में दसवीं कक्षा बहुत बड़ी है — किंतु वही दसवीं कक्षा मास्टर डिग्री जिन्होंने किया है उनकी तुलना में कुछ भी नहीं। जो इतने दिन दसवीं कक्षा में शांति से थे उनके सामने अचानक डॉक्टरेट किया कोई आकर हाज़िर होने पर जैसी अवस्था होती है — वैसी एक अवस्था हो गयी। मैं जिस जगत से आया हूँ उस मात्रा तक का sanction जिनको मिला है उनको वहाँ तक पहुँचने में कितना दिन लगेगा उसका ठीक नहीं। इसीलिए इस कलम के पेड़ का विचार आया, जिससे कम समय के अंदर बहुत जल्दी बहुत दिनों का काम सम्पन्न किया जा सके। पहले बैलगाड़ी से, घोड़े पर सवार होकर दिल्ली जाते थे — कितना समय लगता था सोचो

तो! एक महीना या उससे भी अधिक ही शायद लगता था। जहाँ अब ट्रेन से दिल्ली जाने में लगभग २१/२२ घंटा लगता है, और हवाई जहाज़ से ढाई/तीन घंटे में पहुँचा जा सकता है। मैं तो चार आना कानून के अधीन अटका हुआ हूँ, इसलिए बड़े बड़े योगियों की बात सोच ही नहीं पा रहा। कलम का पेड़ बनकर जो आएँगे, वे उनको पथ दिखाएँगे। उनके आकुल प्रार्थना से ही शायद कलम का पेड़ जन्म लेगा। मैं उसको छिपा कर रखूँगा, अपने मन अनुसार तैयार करूँगा। यहाँ छात्र पढ़ाने वाले मास्टर अनेकों ने ही देखा है किन्तु मास्टरों को पढ़ा सके ऐसा मास्टर किसी ने नहीं देखा। बड़े बड़े योगी जो देवतुल्य हो गए हैं, वे उनके चरणों में पड़े रहेंगे। उसकी एक इच्छा से उनके अनेक रास्ते खुल जाएँगे। पहाड़ के ज़्यादातर साधक ही अपने अपने गुरुओं को surpass कर गए हैं। अब उनको पथ दिखाने वाला कोई नहीं। तुम्हें दूसरी कक्षा में जिन्होंने पढ़ाया, वे हो सकता है दसवीं तक पढ़े हों। उनके लिए दूसरी कक्षा को पढ़ा पाना संभव था। लेकिन तुम खुद जब बीए पढ़ोगे तब उनके लिए तुमको पढ़ा पाना और संभव नहीं होगा। तब और भी उच्च शिक्षित मास्टर चाहिए। अनेक योगी की भी आज यही अवस्था है। उनका पथनिर्देश करने के लिए ही शायद इस कलम के पेड़ का विचार आया। चाँद का जैसे अपना कोई प्रकाश नहीं — सूर्य के प्रकाश से चाँद प्रकाशित है, ठीक उसी प्रकार जो कलम का पेड़ बनकर आएगा उसका भी अपना कहने को कुछ नहीं रहेगा। मेरी शक्ति ही उसके अन्दर से reflected होगी। जिस किसी stage का क्यों न हो, जितने भी ऊँचाई पर कोई योगी क्यों न हो, सब stage के ऊपर वह मास्टरी कर पाएगा। (कालिदास- हम उनको जान या पहचान नहीं पाएंगे?) तुमको पहचान देने का उद्देश्य लेकर तो वह आ नहीं रहा, जिन्हें पहचानना होगा वे ठीक ही उसे पहचान लेंगे। तुम सब उसको लेकर क्या सोचते हो वह बड़ी बात नहीं, असली बात है की जो बहुत ऊँचे stage में पहुँच गए हैं वे उसको पास पाने के लिए पागल हो जाएँगे। बचपन में जनेऊ धारण करने के बाद जिस बार पहाड़ पर गया था तब एक अंचल में गया था। वहाँ किसी भी बाहरी व्यक्ति को प्रवेश करने नहीं दिया जाता। वहाँ शिव ने बैठकर साधना की थी। शिव का वह साधना का आसन आज भी है। चारों ओर बड़े बड़े साँप हैं, बाहर का कोई वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। साँप आज भी शिव के उस आसन का पहरा दिए जा रहे हैं। उस जगह से थोड़ी दूरी पर बड़े बड़े कुछ साधक अभी भी साधनारत हैं। मैं घूमते घूमते उस जगह पर आ पहुँचा था। वहाँ के योगियों के बीच यह प्रवाद प्रचलित है कि, शिव के उस खाली आसन पर जो बैठकर साधना करेगा उन्हीं को वे शिवतुल्य मान लेंगे। उस छोटी सी उम्र में इस आसन के सामने खड़े होकर मेरा उस दिन यह बात मन में आया था की, मेरा कोई संतान एक दिन इस आसन पर बैठेगा। उस दिन मेरी दोनों आँखें पानी से भर गई थीं — आँखें पोंछकर देखता हूँ कि कुछ दूरी पर शिव खड़े हैं हाथ जोड़ करके, उनकी भी दोनों आँखों में पानी है। बचपन की वह चिंता कुछ दिनों से बार बार आ रही है। उस तरह से किसी को तैयार कर पाया तो पहाड़ के साधकों का बहुत उपकार होगा, विशेष उपकार होगा। बहुत दूर का पथ वे बहुत जल्दी अतिक्रम कर पाएंगे। मैं तो चार आना के कानून में अटक गया हूँ इसलिए उस स्तर के योगी मेरे पास आ नहीं पा रहे। लेकिन मेरे उस संतान के पास आने से उनको कोई कानून नहीं रोकेगा। (इसी समय घर का फोन बज उठा। फारवर्ड ब्लाक के अमर चक्रवर्ती ने फोन करके यह बताया कि युक्तफ्रन्ट के मुख्यमंत्री अजय मुखोपाध्याय अगले दिन गुरुदेव से मिलना चाहते हैं। गुरुदेव ने अमर चक्रवर्ती को सहमती ज्ञापन करने बोला एवं अजित भट्टाचार्य को

बुलावा भेजा। जिस विषय पर आलोचना कर रहे थे उस विषय पर बाद में आलोचना करेंगे यह कहकर गुरुदेव ने सलाह दी कि यह वार्तालाप अपनों के बीच घरेलू स्तर तक ही सीमित रखें।)

राम नारायण राम

155, Park Street

21-9-1967

आज जो आया था, प्रनवेश चक्रवर्ती — स्कूल मास्टर — मेरे बारे में सुनकर मुझसे मिलने आया। विक्रमपूर के मालखानगर में एक भक्त के घर पर मुझे देखा था — मेरी आयु तब १४-१५ साल होगी । उसे उसके एक रिश्तेदार से पता चला कि मैं अब पार्क स्ट्रीट में रहता हूँ, इसलिए मिलने आया। वह आनन्दमयी माँ के पास एक समय आया जाया करता था। एक बार चट्टग्राम के उस ओर कोई एक गाँव में मुझको मणिकुन्तला राय और उसका बेटा रामानन्द ले गए थे। मणिकुन्तला राय ज्योतिष राय की पत्नी थी, उनके एकमात्र पुत्र रामानन्द को मैंने मृत्यु के हाथ से बचाया था। ज्योतिष राय आनन्दमयी माँ के प्रधान भक्तों में से एक था। मणिकुन्तला राय जिस गाँव में मुझे ले गयी थी ठीक उसके बगल वाले गाँव में आनन्दमयी माँ भी आई हुई थी। मुझे पता नहीं था कि पास वाले गाँव में ही आनन्दमयी है। आनन्दमयी माँ से मेरी इससे पहले २/१ बार मुलाकात हुई है। रामानन्द को बचाने के बाद आनन्दमयी मुझसे मिलने आई थी। ढाका में स्वामीबाग के भोलागिरि आश्रम में एक बड़ा तालाब था, मैं उस तालाब में स्नान करने जाता था। मणिकुन्तला से मेरी बात सुनकर आनन्दमयी मुझसे स्वामीबाग में मामा के घर जब मिलने आई तो यह सुना कि मैं भोलागिरि के आश्रम में हूँ, तब आनन्दमयी ने मुझसे भोलागिरि के आश्रम में मिलकर 'नारायण' 'नारायण' बोलकर गले लगा लिया था। एकबार शायद टेकाटुली श्यामाबास में कामिनी जज के घर पर आनन्दमयी आकर मिली थी। ढाका में उसे शाहबाग की काली कहकर बुलाते थे। मणिकुन्तला जिस गाँव में मुझे ले गयी थी, उस गाँव में मैं तो सुबह के वक्त दातुन कर रहा था और गाँव के रास्ते पर टहल रहा था। मेरे साथ सुरेश नाम का एक भक्त था, प्रियप्रसाद उसको पहचानता था। अचानक मणिकुन्तला हड़बड़ी में आई और मुझसे जल्दी घर लौटने को कहा। मैंने जल्दबाजी में दाँत साफ करके मुँह हाथ पैर धोकर वापस घर लौट आया। मेरे घर में घुसते ही मैंने देखा कि मणिकुन्तला जल्दबाजी में दरवाजा बंद कर रही है। मैं तो समझ नहीं पा रहा था कि माजरा क्या है, मणिकुन्तला ने तब पलंग की तरफ हाथ से इशारा किया तो मैंने अच्छे से देखा कि कोई एकजन पलंग पर बैठी है — जानी पहचानी लग रही है, अचानक खाट से नीचे उतरकर मेरे पैरों में प्रणाम करके बोल रही है — नारायण, तुम मुझे बचाओ। मैं तब समझ गया कि, यह हैं आनन्दमयी माँ। मैंने पूछा — तुम आनन्दमयी माँ हो ना? वह बस एक ही बात कह रही थी — नारायण, तुम मुझे बचाओ। तब मणिकुन्तला ने मुझे पूरी घटना बताई। पड़ोस के जिस गाँव में आनन्दमयी थी उस गाँव की ही एक ७/८ साल की बच्ची तीन दिनों से लापता थी। उस बच्ची के पिता, माता और परिवार के अन्य सदस्य आनन्दमयी के विशेष भक्त थे। बच्ची प्रतिदिन आनन्दमयी के लिए फूल लाती थी और आनन्दमयी भी उस लड़की से बहुत प्यार करती थी। लेकिन परसों दोपहर के बाद से वह बच्ची गाँव में कहीं भी नहीं मिल रही थी। बच्ची के पिता माता पागलों की तरह आकर आनन्दमयी के चरणों पर गिर पड़े। आनन्दमयी ने उन्हें आश्वासन दिया कि बच्ची ठीक है और जल्द ही वापस आ जाएगी। कल रात भी बच्ची के माता पिता आनन्दमयी के पास खूब रो धोकर गए, आनन्दमयी ने एक ही बात कही — बच्ची ठीक है और जल्दी ही वापस आ जाएगी। आज

प्रातःकाल गाँव के एक तरफ़, एक टूटेफूटे मकान के कुएँ में बच्ची का शव तैर उठा। उस मकान में कोई नहीं रहता था। कुएँ के पास एक कमल का पेड़ है, हो सकता है उस पेड़ का फूल तोड़ते समय असावधानी से बच्ची कुएँ में गिर गयी हो और उसकी मृत्यु हो गयी हो। इस घटना से गाँव में सनसनी फैल गयी और एकप्रकार छुपते छिपाते आनन्दमयी मणिकुन्तला के घर में आ पहुँची। आनन्दमयी मणिकुन्तला का घर पहचानती थी — इससे पहले भी ज्योतिष राय के साथ आनन्दमयी कई बार आई थी, इसलिए परिचित होने की वजह से वह यहाँ आ पहुँची। मणिकुन्तला पूरी घटना सुनकर उसको बोली — तुम्हें इस विपदा से केवल एकजन ही रक्षा कर सकते हैं — वे हैं मेरे बालक गोसाई, जिन्होंने मेरे पुत्र को मृत्यु से बचाया है। उधर पड़ोस के गाँव में आनन्दमयी को न पाकर गाँव के लोग और भी क्रोधित हो गए। सभी एक ही बात कह रहे थे — बच्ची मर गयी, और वे यही कहती रहीं कि बच्ची ठीक है, वापस आ जाएगी। जब मैं दातुन करते करते टहल रहा था उसी समय आनन्दमयी मणिकुन्तला के घर आई थी। उसके मुँह से सब सुनकर मणिकुन्तला जल्दी से मुझे यहाँ बुलाकर लाई। मैंने सब सुनकर बोला — माँ बनी हो और बच्चे का रोना सुन नहीं पाती हो? ये कैसी माँ हो तुम? जो भी हो, पड़ोस के गाँव में मेरे भी कुछ भक्त थे। उस गाँव में आनन्दमयी को लेकर गया और बच्ची के माता, पिता और सभी को समझा बुझाकर इस विषय का समाधान किया। उस दिन गाँव के उस सभा में प्रनवेश था, उसने पूरी घटना अपने आखों के सामने देखी थी — उस घटना की बात वह आज चर्चा कर रहा था। मैंने उससे कहा, यह लेकर बाहर आलोचना नहीं करना — क्योंकि मैं किसी के मान सम्मान को ठेस पहुँचे ऐसी कोई बात नहीं करता। मैं हूँ विश्व के सुर के पथ का पथिक, मैं मनुष्य के साथ छल चातुरी करके, विस्मित करके मेरा सम्मान नहीं बढ़ाता। आनन्दमयी से कहा — तुम सारा दिन क्या करती हो? खाली पूजा अर्चना, बर्तन, कोशाकुशी, लोटा, कटोरा यही सब लेकर सारा दिन कट जाता है? तुम्हारा कोई तत्व नहीं? एक सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति इस अनंत विश्व के तत्व रूपी सागर में डूबा रहता है, उसी में से वह ढूंढ पाता है इस विश्व का अन्तर्निहित सुर। प्रणवेश ने कहा — आपने उस दिन आनन्दमयी माँ को सबके सामने बहुत सम्मान दिखाकर उनकी रक्षा की। इसलिए बोल रहा हूँ आज का समाज वास्तविक जो स्वच्छ सुर है, उससे कोसों दूर हट गया है। आनन्दमयी के इस घटना की जानकारी रामठाकूर को भी थी। चट्टग्राम में मेरे मौसा के घर पर रामठाकूर मुझसे मिलने आए थे। रामठाकूर के भीतर सच्चा स्वच्छ सुन्दर सुर देखा था। रामठाकूर मुझे अच्छे लगे थे। इसके बाद नारायणगंज में भी एकबार रामठाकूर मिलने आए थे। तब वे पेट की बिमारी से बहुत पीड़ित थे। उस बार मुझे गले लगाकर वे बहुत रोये। (कालिदास- यहाँ के साधकों में से तुमको और कौन कौन पसंद आए थे?) यहाँ के समाज में जो प्रसिद्ध हैं उनमें से ज़्यादातर को मैं सच्चा साधक नहीं मानता, जो अपने मान, सम्मान, प्रतिष्ठा के लिए — केवलमात्र अर्थ उपार्जन करने के लिए छल चातुरी का आश्रय लेकर शिष्यों के सिर पर हाथ फेरकर उनका शोषण करते हैं मैं उन्हें साधक के किसी भी स्तर पर नहीं रख पाता। मैं जन्म से जो सुर लेकर आया हूँ उसी सुर के सागर में अहर्निश डूबकर मेरा काम करता जा रहा हूँ, यहाँ पर किसी छल चातुरी के द्वारा खुद को प्रतिष्ठित करने की कोशिश नहीं है। मगर कालिदास ने जो बात कहा कि सच्चा साधक क्या यहाँ कोई नहीं है? है, वह संख्या में बहुत कम है। जो दो एक हैं वे तो इतने आत्ममग्न रहते हैं कि उनको तुम लोगों की दृष्टि से पहचान पाना कठिन है। मैं किसी की निन्दा समालोचना नहीं कर रहा, जिव्हा में बाल पड़ जाए तो जिस प्रकार जिव्हा अपने आप थूक देता है उसी

प्रकार मेरे अन्तर्निहित सुर रूपी जिव्हा द्वारा जब परखने गया तो जो मुझे पसंद आए केवल उन्हीं की बात कर रहा हूँ। जो और भी ऊँचे स्तर पर चले गए हैं वे कदाचित्त समाज में दिखाई नहीं पड़ते। बचपन में जब हिमालय की ओर यात्रा करता था तब वहाँ देखा अभी भी कुछ कुछ बड़े साधक निरंतर साधना कर रहे हैं। ऊँचा नीचा जो बोल रहा हूँ वह तुम लोगों के समझने की सुविधा के लिए बोल रहा हूँ। मेरी दृष्टि में सभी विश्वप्रकृति से समान पूँजी लेकर आए हैं। मान लो कि दो भाइयों ने १० हज़ार रुपये से व्यवसाय शुरू किया। पाँच साल बाद देखा गया कि एक भाई की पूँजी १० हज़ार रुपये से बढ़कर एक लाख रुपये हो गयी है। दूसरे भाई ने भी १० हज़ार रुपये से व्यवसाय शुरू किया था। पाँच साल बाद देखा गया कि उसकी पूँजी तो बढ़ी ही नहीं बल्कि बाज़ार में उस पर ५० हज़ार रुपये का कर्ज़ा हो गया। वर्तमान में बड़े बड़े साधकों और तुम लोगों में यही अंतर है कि उनकी पूँजी बढ़ गई है, और तुम लोग बाज़ार के कर्ज़दार हो गए हो। इस कर्ज़ को अपराध का बोझा कहा जाता है। जो वह पूँजी यहाँ रहकर कार्य करके बढ़ाकर ले जा पाता है — वही बड़ा हो जाता है। जैसे शिव के रूप में तुम जिन्हें जानते हो, उन्होंने भी एक दिन तुम्हारे जैसे साधारण घर में जन्मग्रहण किया था। तुम्हारे जैसे घर संसार किया था। उसके बाद एकदिन वही शिव साधना के द्वारा कितने बड़े हो गए। एक ही स्कूल के छात्र हैं सभी — कोई पहली कक्षा में, कोई द्वितीय और कोई दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। जो आज पहली में है वह जैसे एक दिन दसवीं में उठेगा, उसी प्रकार जो आज दसवीं में उठा है वह एकदिन में ही दसवीं में उठ गया ऐसा नहीं — वह भी एक दिन पहली कक्षा में था। उसी तरह जिनकों आज बड़ा बड़ा साधक बोल रहा हूँ वे भी एकदिन तुम्हारी तरह थे। सब जीव ही विश्व ब्रह्मांड में पूर्ण क्षमता लेकर आते हैं। सब जीव ही महाविश्व के बीज हैं। एक वटवृक्ष के बीज को देखकर आसानी से यह नहीं समझा जा सकता कि यह बीज एक दिन कितना बड़ा पेड़ बन सकता है। एक व्यक्ति जेब में ५०० बरगद के बीज लेकर चल रहा है । लेकिन वही एक बीज जिस दिन पूर्ण महिमा के साथ अंकुरित होगा तो उस व्यक्ति जैसे सैकड़ों व्यक्ति उस वटवृक्ष के नीचे शरण ले सकेंगे। सृष्टि के कार्यावली में भी ठीक उसी प्रकार बीज प्रस्फुटित करने की व्यवस्था होती जा रही है। विश्व के सब कुछ का sample अल्प मात्रा में तुम सब को यहाँ दे दिया गया है। यह जो देख पाते हो, सुन पाते हो, स्वाद आश्वादन की व्यवस्था है, क्रोध करते हो, मिज़ाज़ करते हो, हिंसा करते हो, अभिमान करते हो — यह सब कुछ sample के रूप में विश्व की ओर से दे दिया गया है। विश्वप्रकृति देखेगी कि तुम कितना प्रकृति के नियम के साथ हाथ मिलाकर इन sample का व्यवहार कर रहे हो। साधारण जो हैं वे इस sample के चक्कर में फँसकर सारा जीवन बिता देते हैं। सामान्य लोभ, सामान्य मोह, सामान्य अर्थ के लिए, सामान्य यश के लिए ऐसा कोई गलत काम नहीं जो करने से पीछे हट रहे हैं। लेकिन प्रकृति ने दृष्टांत स्वरूप दिया है मृत्यु — जिससे तुम सतर्क रहो कि यहाँ का खेल सामान्य कई दिनों का है। तुम्हारे जैसे साधारण मनुष्य जो हैं, वे इससे अधिक सोच नहीं पाते — इसके प्रभाव में पड़कर अपना सारा जीवन बिता देते हैं। इसके फलस्वरूप यह होता है कि अति सामान्य कारण से वे पथभ्रष्ट हो जाते हैं। ये बलू बिशु को कितना प्यार किया, ढाका के उन दिनों से उनके साथ मेरा परिचय है। मगर देखो अति सामान्य कारण से वे मुझसे दूर हो गए। ऐसा है यहाँ के साधारण मनुष्यों का स्तर। यह है अज्ञानता का स्तर। इसलिए जो बड़े बड़े हो गए हैं वे साधारण मनुष्यों के निन्दा या प्रशंसा — कुछ भी ग्रहण नहीं करते। क्योंकि जो स्वयं अंधकार में डूबे हुए हैं वे अन्य किसी का न्याय विचार क्या करेंगे? सोचो तुमने एक बहुत सुन्दर हीरे का नेकलेस पहना है। अब कोई

अंधा व्यक्ति जिसको कुछ दिखाई नहीं देता वह अगर तुम्हारे नेकलेस की प्रशंसा करे तुम्हें क्या सुनने में अच्छा लगेगा? कारण, जिसे बिन्दुमात्र दिखाई नहीं देता, वह एक दृश्य वस्तु का सौन्दर्य किस प्रकार उपलब्ध कर पाएगा? ठीक उसी प्रकार जो बड़े बड़े हो गए हैं वे भी तुम्हारे मुख से की गई उनकी प्रशंसा या निन्दा किसी का भी विशेष महत्व नहीं देते — केवल सुनते हैं और तुम सब से सद्भाव बनाये रखते हैं। यह स्तर साधारण मनुष्य का स्तर है — जिनके मन में विश्वप्रकृति का अपार रहस्य सहसा कोई प्रभाव नहीं डालता। इसके ऊपर एक स्तर है, जिस स्तर के व्यक्ति इस विश्वप्रकृति के अन्दर एक रहस्य का आभास ढूंढ पाए हैं — वे पागलों की तरह रास्ता खोज रहे हैं, पर पथ नहीं पा रहे। वे संख्या में बहुत कम हैं। इसके बहुत ऊपर, मैं जिन्हें साधक बोलता हूँ उनका स्थान है। साधक कौन है? जो साधना करते हैं। साधना कौन करते हैं? जिन्होंने पथ पा लिया है। साधारणतः मणिपुर से यह यात्रा असल में शुरु होती है। यहाँ भी देखो, तुम जब माँ के पेट में थे तभी भी मणिपुर अर्थात् नाभी से ही खाद्य ग्रहण करते थे। वह बड़े बड़े साधक, जो मणिपुर अतिक्रम कर चुके हैं उनका एक ही कार्य है — विश्व के सुर का संकेत पहचान कर उसे पकड़ कर निरंतर आगे अग्रसर होना। इस श्रेणी के साधक यहाँ के समाज में दिखाई नहीं देते, मगर पहाड़ों के तरफ अभी भी कुछ कुछ हैं। (कालिदास- तुम जो कलम के पेड़ को लेकर कई दिनों से आलोचना कर रहे हो, वह क्या इस स्तर का है?) नहीं, मेरा कलम का पेड़ जो होगा वह केवल साधक ही नहीं, बल्कि और भी ऊपर जो चले गए हैं उनके भी ऊपर अवस्थान करेगा। साधकों का भी बहुत स्तर है, जो बहुत ऊपर चले गए हैं वे ही एकदिन देवता बन जाते हैं। बचपन में मेरे साथ बहुत उच्च साधकों के कई दल कभी कभी मिलने आते थे। दोगाछी के घर में एकबार पाँचजन साधकों का ऐसा एक दल रात को मिलने आया था। वे विशाल विशाल पुरुष हैं। मैं जिस कमरे में था उस कमरे से उनके बातों की आवाज़ सुनकर नानी बगल के कमरे से देखने आ गयी। आकर एकदम हैरान हो गयी — इतने विशाल विशाल काया के मनुष्य तो पहले कभी देखा नहीं! वे आकाशपथ में भ्रमण करते करते मेरा संधान पाकर मुझसे मिलने आए थे। ऐसा ही और एक दल रात को उजानचर में मिलने आता था। एक बार मेरी बहन गीता उनको देखकर बहुत डर गयी थी, गीता तब ५/६ साल की होगी — वो सो रही थी। अचानक नींद टूट जाने पर उन्हें देखकर चीख उठी। यह दल पहाड़ के एक स्थान पर अभी भी अवस्थित है। वे आकाशपथ से कभी कभी सागर की ओर जाते हैं, तब वे मुझसे मिलना चाहते हैं। यह दल भी इंतज़ार कर रहा है कलम के पेड़ के लिए। केवल साधकों को ही नहीं, बल्कि और भी बहुत ऊँचाई पर जो हैं उनको भी कलम का पेड़ guide कर पाएगा। छात्रों को जो मास्टर पढ़ाते हैं, और उन मास्टरों को जो पढ़ाते हैं उनको भी मास्टर ही बोला जाता है — फिर भी साधारण मास्टर के साथ उसकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती। कलम का पेड़ है मास्टरों का भी मास्टर। (कालिदास- जो पथ पा चुके हैं उन्हें फिर guide की क्या आवश्यकता?) विश्व का यह पथ अनंत है — यह पथ अनंतकाल का है। पथ पर चलते चलते विभिन्न प्रकार के असुविधाओं के सम्मुखीन पथिक हो सकता है। कलम का पेड़ उन असुविधाओं से उनको मुक्त कर देगा। इसके अलावा भी देखा जाए तो अनेक सुगम पथ हैं, लेकिन उन पथों का संधान मालूम नहीं होने के कारण बहुत लोग थोड़े कठिन पथ से यात्रा कर रहे हैं। उन सुगम पथों का संधान कलम का पेड़ उन साधकों को दे देगा। बहुत परिश्रम करके जो पथ अतिक्रम किया जाता है, बाद में देखा जाता है कि वह लक्ष्य तक पहुँचने का और भी सहज पथ था। पहाड़ का रास्ता देखा है कैसे घूम घूम के ऊपर उठता है। इस घुमावदार पथ पर

देखा गया कई माईल चला किन्तु वास्तव में चढ़ा शायद १०० या २०० मीटर। पहाड़ी रास्तों पर इसी प्रकार तो सभी उठते हैं। लेकिन अगर हेलीकॉप्टर से जाएँ तो वह सीधा लंबवत ऊपर उठेगा, उसे तो पहाड़ की ढलान पर घूम घूम कर चढ़ना नहीं पड़ेगा। फलस्वरूप वह व्यक्ति खूब कम समय एवं कम परिश्रम से बहुत ऊँचाई पर बहुत आसानी से चला जाएगा। यहाँ के जो योगी हैं, वे बड़े बड़े हो जाने के बावजूद भी अधिकांश ने बहुत कठिन रास्तों से होकर अपना रास्ता अतिक्रम किया है। उन्होंने उनके संस्कारों के प्रभाव में पड़कर अति सहज विषय को बहुत जटिल बना लिया हैं। दूसरी ओर मेरा पथ है प्रकृति की वह सहजात धारा, यह जो original instinct है — वह पथ ही मेरा पथ है। चूंकि मेरे कलम का पेड़ मेरी सहजात चेतना के आधार पर बड़ा होगा इसलिए तब वह प्रकृति का वह संस्कारमुक्त अति सहज पथ का संदेश योगियों को दे पाएगा। इसके फलस्वरूप जो कार्य करने में उन्हें शायद कई हज़ार जन्म लग जाते वह कार्य वे एक ही जन्म में पूरा कर पाएंगे। इसके लिए वे कलम के पेड़ की आशा में आकुल व्याकुल होकर बैठे हैं और दिन रात मुझसे प्रार्थना कर रहे हैं कब मैं कलम का पेड़ बनाकर किसी को भेजूँ! प्रकृति में मेरा जो records है, वही चार आना नियम के कारण उनके लिए तो मेरे पास आना संभव नहीं हो रहा। चार रास्तों के मोड़ पर जैसे arrow रहता है — इस तरफ G. T. Road, उस तरफ B.T. Road, ठीक उसी प्रकार प्रकृति से जैसे साधकों का दिकनिर्देश करने के लिए कलम का पेड़ आएगा। विशाल विशाल साधक, जो देवतुल्य हो गए हैं वे उसे मस्तक पर उठाकर रखेंगे क्योंकि स्रष्टा का निर्देश मानों उसके माध्यम से ही साधकों के पास पहुँचेगा। वे उनके इतने दिनों का सब साधना छोड़कर उसके निर्देश से ही पथ चलेंगे। इसके अतिरिक्त भी एक बड़ा भूमिका कलम के पेड़ का रहेगा, कानून के शिकंजे में फँसकर जो सब बड़े साधकों के साथ या अन्य किसी कारण से जिनके साथ मेरा मिलना नहीं हुआ कलम का पेड़ अगर चाहे तो बड़ी आसानी से ही उन्हें मेरे पास ला पाएगा। प्रकृति द्वारा साधकों का काम सहज बनाने के लिए ही कलम के पेड़ की सृष्टि की गई क्योंकि मैं विश्व के अनेक कानूनों के बीच से गुज़र रहा हूँ, लेकिन उसके ऊपर कानूनों की खबरदारी नहीं रहेगी। पहाड़ों पर साधकों के बीच कभी कभी सभा होती है, प्रत्येक १२ साल बाद बाद बड़ी सभा होती है। उस सभा में साधकों के बीच भावनाओं का आदान प्रदान होता है। साधना का पथ और भी सहज और भी कम समय में ज़्यादा पथ किस प्रकार अतिक्रम किया जाए यह सब लेकर आलोचना होती है। कारण समय बहुत कम है, शरीर के रहते हुए जितना भी कार्य किया जाएगा वही रहेगा — विदेही अवस्था में कार्य का फल नहीं होता। अतः जन्म से मृत्यु इस सामान्य समय के अंदर जितना कार्य करके रखा जाए, वही हमेशा के लिए रह जाता है । क्योंकि वे प्रकृति के कार्य में व्यस्त रहते हैं इसलिए प्रकृति अवश्य ही उनको कुछ सुविधा प्रदान करती है जैसे उनकी आयु कभी कभी कई सौ वर्षों की भी होती है। किन्तु जितनी भी आयु क्यों न हो मृत्यु के हाथों से मुक्ति तो नहीं मिलेगी, साधना की तुलना में यह आयु बहुत ही कम है — इसलिए कितने कम समय में कितना ज़्यादा किया जाए इस विषय पर भी आलोचना होती है। १९३७ या १९३८ साल में ऐसे ही एक सभा में मुझे निमन्त्रित किया गया। उस बार भूपेन मेरे साथ पहाड़ों पर गया था। (कालिदास- बंका ने बताया १९३८ साल था।) हाँ, वो गया था — १९३८ साल ही होगा — वह वही १२ सालों बाद बाद जो बड़ी सभा होती है वैसी एक सभा थी। वैसे तो बीच बीच में ही सभा होती है किन्तु १२ सालों बाद बाद जो होती है — वह विशेष सभा है। भूपेन मेरे साथ रंटं या रंसेटां ऐसे किसी एक जगह तक गया था, उसके बाद वहाँ से वे मुझे अकेले ही ले गए थे। भूपेन उस जगह

से लौट आया था। वहाँ बाहर के किसी को प्रवेश करने नहीं दिया जाता। किन्तु पिछले क्लास में जो मैंने बोला था कि चार आना के उस कानून के कारण बहुत जो बड़े बड़े हो गए हैं — वे मेरे पास नहीं आ पाए। उनका संदेश दूसरों द्वारा मेरे पास लाया गया। ताकि मैं किसी को उनके पास भेजूँ यह अनुरोध उन्होंने किया था। मैंने तब बोला था मेरे किसी संतान को मैं मेरा प्रतिनिधी बनाकर भेजूँगा। उन साधकों के लिए मेरा वह संतान, वह कलम का पेड़ जाएगा। साधकों के उस सभा में जो सबसे बड़ा हो गया है, उसको विचारक के आसन पर बिठाया जाता है। लेकिन ३८ साल के बाद से अब तक जितने बार भी वह सभा आयोजित किया गया वह विचारक का आसन खाली रखा गया। सभा अब भी होती है, भावों का आदान प्रदान होता है लेकिन विचारक का आसन खाली रखा जाता है। केवल एक फूल की माला उस सर्वोच्च आसन पर रखकर वे उनके आलाप आलोचना करते हैं। मैं जब तक किसी को वहाँ नहीं भेज रहा तब तक वह आसन खाली ही रहेगा। (कालिदास- यह सभा क्या अब भी होता है?) बहुत वर्षों से यह चला आ रहा है। १९३८ के साथ १२ जोड़ो — कितना हुआ — १९५० — हाँ, १९५० में हुआ, उसके बाद और १२ जोड़ो — कितना हुआ — १९६२ साल, १९६२ में भी हुआ — इस प्रकार प्रति १२ वर्षों में एकबार होता है। (कालिदास- इसके बाद फिर ७४ साल में होगा, उसके बाद ८६, ९८ ऐसे चलता रहेगा। उस दिन जो शिव के साधना के आसन की बात तुमने बोली थी वह आसन और यह विचारक वाला आसन दोनों क्या एक है?) नहीं, शिव के साधना का जो आसन है वह पहाड़ों पर ही एक अन्य स्थान पर है। उस स्थान का पहरा बड़े बड़े साँप दे रहे हैं। उस स्थान के आसपास अभी भी कुछ बहुत बड़े योगी काम किए जा रहे हैं। बहुत से योगी ऐसे भी हैं जो पेड़ के नीचे बैठकर लगातार साधना करते रहने के कारण, पेड़ की पत्तियां और शाखाएं धीरे धीरे उनके ऊपर grow कर गए हैं, ऐसा चेहरा हुआ है कि अगर बहुत ध्यान से ना देखा जाए तो वह पेड़ है या व्यक्ति यह समझा ही नहीं जा सकता। और यह विचारक के आसन के बारे में जो बात बोली थी वह यह है कि जब १२ साल बाद बाद यह सभा होती है, वहाँ पर बहुत बड़े बड़े योगी एवं साधक एकत्रित होते हैं — वहाँ सबसे बड़ा जो होता है उसे विचारक बनाया जाता है — साधना के किसी भी विषय पर द्विमत होने पर वे अपनी राय देते हैं एवं उनकी राय सभी मान लेते हैं। ३८ साल से प्रति १२ वर्ष के अंतराल पर उस विचारक के आसन पर एक माला रखकर वे सभा करते चले आ रहे हैं, किसी और को विचारक नहीं बनाया। मेरा representative बनाकर किसी को यदि मैंने किसी दिन भेजा तभी उसको वे उस आसन पर बैठाएँगे। (कालिदास- शिव के आसन और विचारक के आसन पर क्या एक ही व्यक्ति बैठेगा या अलग अलग से दो व्यक्ति जाएँगे?) किसी को यदि कोई काम देकर किसी गाँव में भेजा जाए, उस गाँव में ही यदि कोई दूसरा काम हो तब क्या उसके लिए अलग से किराया खर्च करके किसी दूसरे को भेजा जाता है? सरल तर्क क्या कहता है? पहाड़ पर एकजन ही जाएगा, वह मेरा प्रतिनिधि बनकर ही जाएगा। अब कलम का पेड़ अगर अपनी खुशी से किसी को अपना साथी बनाकर ले जाए तो अलग बात है। प्रकृति के अपने नियम से ही अकस्मात किसी के अंदर विश्व का सुर बहुत आसानी से पकड़ में आता है, तब Universe की ओर से उनको बहुत बड़ा status दिया जाता है। कलम का पेड़ भी उसी प्रकार बहुत बड़े status का अधिकारी होगा। बड़े बड़े योगी उसे ईश्वर की तरह देखेंगे। मैं जैसे इस विश्व को represent कर रहा हूँ ठीक वैसे मेरा कलम का पेड़ भी मेरा representative बनकर उनके पास जाएगा। मेरी इच्छा ही उसके अन्दर से reflected होगी। वन में हज़ार हज़ार पेड़ होते हैं, उनके अन्दर अकस्मात्

किसी एक पेड़ में एक विशेष फूल का जन्म होता है — वह फूल का पेड़ तब सभी को मुग्ध करता है, आकर्षित करके अपनी ओर खींच लाता है। कोयले के खदान में भी अनेक समय देखा जाता है एक ऐसे बड़े हीरे का जन्म हुआ जिसका कीमत इतना ज़्यादा हुआ कि उस हीरे के टुकड़े से उस कोयले के खदान को ही खरीद लिया जा सकता है। कोयला और हीरा तो एक ही पदार्थ से बने हैं — लेकिन दोनों के कीमत में कितना अंतर है! ये जो मंडल हैं — जिनकी कोयले के खदान थी — वे तो मुझे ले गए हैं कई बार उनके वहाँ — उन्होंने ही आलोचना की थी कि उनके परिचित किसी के कोयले के खदान में ऐसी घटना घटी थी — ऐसे एक हीरे का जन्म हुआ जिस हीरे को देखने विदेश से साहेब लोग आए थे। कलम का पेड़ भी उसी तरह यहाँ के परिवेश में जन्म लेकर भी मानो अन्य एक समय से आएगा। तुम्हारे तुलना में वह बहुत ही आगे रहेगा एवं तुम्हारे साधारण विचारों से उसके कीमत का आंकलन किया नहीं जा सकता। प्रकृति की ओर से जिसे कलम का पेड़ बनाने के लिए भेजा जाएगा — उसको मैं मेरे मन के अनुसार तैयार करूँगा, यहाँ के परिवेश का प्रभाव जिससे न पड़े इसलिए उसे थोड़ा छिपाकर रखना होगा। कितना कर पाऊँगा यह मुझे नहीं पता, परन्तु साधकों और योगियों के एकान्त इच्छा से ही कलम का पेड़ रूप लेगा। मेरा सच्चा रूप, मेरा असली सोच उससे ही सभी जान पाएंगे। मैंने तो देखो, बचपन से मेरे सुर के अलावा अन्य किसी ओर भी ध्यान नहीं दिया। इतना निन्दा बदनामी सब हज़म करके आगे बढ़ता चला, कभी भी एक मुहुर्त के लिए भी मैंने अपने क्षमता का अपव्यवहार नहीं किया — इसीलिए विश्वप्रकृति में मेरा records इतना अच्छा हुआ है। यह बात मेरा व्यक्तिगत बात है — तुम्हें बताने के उद्देश्य से नहीं बोल रहा, करीब हो इसीलिए मेरे मुँह से यह बात सुन पाए। Universe में मेरा क्या position है वह पहाड़ के इन साधकों ने थोड़ा बहुत उपलब्धि किया है। लेकिन वे मेरे पास पहुँच नहीं पा रहे। कलम का पेड़ चाहे तो सभी को मेरे पास पहुँचा पाएगा। इतने बड़े एक सागर को एक सामान्य व्यक्ति ही तो खाल काटकर बहुत दूर तक पहुँचा सकता है। इसी प्रकार खाल काट काट कर सागर का जल बहा कर मरुभुमि को भी हरा भरा कर दिया जा सकता है अगर दृढ़ अध्यावसाय हो तो। तुम सब अगर मुझको समझ पाते तो फिर तुम्हारा जीवन परिवर्तित हो जाता। बादल जिस प्रकार सूर्य को छिपाकर रखता है, तुम्हारे हज़ार हज़ार जन्मों के अपराधों का बोझा भी ठीक उसी प्रकार तुम सबको मुझसे छिपा रहे हैं — तुम सब मुझको समझ नहीं पा रहे — अति सामान्य सांसारिक इच्छाएं और उनकी पूर्ति के बीच मुझको रखकर वह सब कार्य मुझसे करवाना चाह रहे हो। मैं तुम्हारे मन मुताबिक न चलूँ तो विरुप होकर चले जा रहे हो, और फिर बलू बिशु के तरह कोई कोई मेरे विरुद्ध कोर्ट में जाने का भी plan कर रहे हैं। सब जानकर भी मैं चुप रहता हूँ। तुम सब यदि थोड़ा मेरे मन मुताबिक चलते तो फिर मैं तुम सबको इस विश्व की खदानों से अनन्त संपद लाकर तुम सबको भरपूर कर दे पाता। तुम तब समझ पाते, जो पाकर सब कुछ पाना हो जाता है वह संपद एकमात्र मैं ही तुम सबको दे सकता हूँ और उसके लिए तुम सबको कोई साधना भी नहीं करनी पड़ेगी — केवलमात्र मेरी खुशी के द्वारा ही मैं तुम सबको वह दे सकता हूँ। तुम वह परम संपदा की खोज न करके सामान्य सामान्य जागतिक विषयवस्तु जो सदैव तुम्हारे पास नहीं रहेगा उनके मोह में पड़कर डूब रहे हो। मैं चाहता हूँ तुम सब मुझको थोड़ा काम में लगाओ।

राम नारायण राम

155, Park Street

22-09-1967

(आज श्रीश्रीठाकुर से मिलने बनारस से तीन सन्यासी आए थे। श्रीश्रीठाकुर उनसे मिले और उनको खाना खाकर जाने को कहा। उनके जाने के बाद दोपहर को श्रीश्रीठाकुर ने यह चर्चा की।)

श्रीश्रीठाकुर- क्या वे सब चले गए?

कालिदास- हाँ, थोड़ी देर पहले चले गए।

श्रीश्रीठाकुर- जाने से पहले उन्हें कुछ पैसा देने को कहा था।

कालिदास- हाँ, प्रियदास ने दे दिया। आज जो आए थे उन्होंने क्या पहले कभी तुमको कहीं देखा है?

श्रीश्रीठाकुर- उनके साथ एक साधक की मुलाकात हुई थी। जब मेरी आयु १६/१७ वर्ष की थी तब एकबार पहाड़ों की ओर जाते समय कालिंपोंग में मेरे साथ उस साधक की भेंट हुई थी। उसी साधक से इन्होंने मेरी बात सुनी होगी।

कालिदास- वे क्या बहुत बड़े साधक हैं?

श्रीश्रीठाकुर- सभी बड़े साधक हैं। वही बड़ा होगा, जो काम करेगा, यहाँ किसी छोटे बड़े का प्रश्न क्यों आ रहा है?

कालिदास- वे तुमको रामकृष्ण के विषय में क्या पूछ रहे थे?

श्रीश्रीठाकुर- उनमें से एक व्यक्ति कुछ समय के लिए ढाका में रहता था। वह भी करीब २०-२५ साल पहले। उस समय उसका रामकृष्ण मिशन में आना जाना था। रामकृष्ण के संपर्क में उसने मुझसे जानना चाहा। मैंने कहा, इस विषय पर मुझसे कुछ न पूछना ही बेहतर होगा।

कालिदास- तुमने क्या उनको रामकृष्ण के संपर्क में कुछ भी नहीं बोला?

श्रीश्रीठाकुर- मैं आम तौर पर किसी व्यक्ति के विषय में टिप्पणी करना पसंद नहीं करता। हालांकि स्वच्छ मन लेकर सत्य को जानने की आकुलता से कोई अगर कुछ प्रश्न पूछे तब शायद कभी कभार २/१ बात बोल देता हूँ। मेरे अंतर्मन के सुर के यंत्र में जो कुछ भी पकड़ा जाता है वही मैं निष्पक्ष भाव से बोलता हूँ। कोई व्यक्ति अगर दुबला होता है तब उसको दुबला बोला जाता है। किसी के त्वचा का रंग अगर काला हो तो उसे सांवला बोला जाता है — ठीक उसी तरह मेरे अन्तर चक्षु से जो दिखता है मैं वही बोलता हूँ। लेकिन समस्या यह है कि जैसे तुम अपने यहाँ की आँखों से दुबला या काला देख सकते हो ठीक उतनी स्पष्टता से तो तुम किसी की आध्यात्मिकता के संबंध में नहीं समझ पाते! इसीलिए तब कोई यदि मुझपर निर्भर करके दो बात सरल मन से पूछे तब २/१ बात मैं बोलता हूँ। यहाँ की आध्यात्मिकता अधिकांश प्रचार के ऊपर ही आधारित है। जिसका जितना प्रचार है, वह यहाँ उतना बड़ा अवतार माना जाता है। गहराई में उतरकर तो सभी नहीं देख पाते। इसीलिए उस मन की अवस्था अनुकूल न हो तो हल्के प्रश्न का उत्तर मैं अनेकों बार नहीं देता। स्वच्छ मन लेकर कोई बात ग्रहण न करने पर अनेकों बार मेरे कथन की अपव्याख्या हो जाती है। हो सकता है कि जानने के

आग्रह के कारण जिस व्यक्ति को मैंने कहा था उसने स्वच्छ मन से ही इसे ग्रहण कर लिया, लेकिन उसने किसी और को वह बात कहा एवं जिसको कहा गया वह शायद कही गई बात का सार समझ नहीं पाया। इसीलिए रविवार के क्लास में आमतौर पर मैं तत्व की आलोचना करता हूँ, व्यक्तिगत प्रसंगों से दूर रहने की चेष्टा करता हूँ।

कालिदास- त्रैलंग स्वामी और लोकनाथ ब्रह्मचारी के संपर्क में तुम उनसे क्या बोल रहें थे?

श्रीश्रीठाकुर- त्रैलंग और लोकनाथ को मैं बहुत प्यार करता हूँ। वे बहुत उच्चकोटी के साधक हैं। अश्विनी चैटर्जी को एकबार लोकनाथ ने बनारस में त्रैलंग स्वामी के पास भेजा था। तब अश्विनी ने त्रैलंग स्वामी के लिए लगभग डेढ़ मन दूध से खीर बनाया था। अश्विनी बहुत अच्छा खाना बनाना जानता था। आज जो आया था वह बनारस से आया था, इसीलिए वह खीर पकानेवाली कहानी बता रहा था। अश्विनी एकबार मेरे लिए मुंशीगंज से खाना बनाकर ले आया था। त्रैलंग स्वामी को खीर पकाकर खिलाने वाली घटना का जिक्र वह प्रायः किया करता था। अश्विनी जब ढाका में मेरे पास आता था, तब मेरी आयु १६/१७ वर्ष की थी। उसके साथ चिंताहरण मास्टर नाम का एक व्यक्ति आता था। मेरी माँ उन दोनों को बहुत प्यार करती थी। अभी भी माँ कभी कभी उनकी बात करती है। साधक के रूप में मुंशीगंज नारायणगंज इलाकों में अश्विनी बहुत प्रसिद्ध था। विवेकानंद ने जब पूर्व बंगाल का दौरा किया तब अश्विनी से मिलकर उन्हें रामकृष्ण मिशन में योगदान करने का अनुरोध किया था। अश्विनी ने कहा कि मैं लोकनाथ बाबा द्वारा दिए गए अर्धमंत्र को पूरा करनेवाले उस पूर्णब्रह्म की प्रतीक्षा कर रहा हूँ — मेरे लिए तुम्हारे मिशन में योगदान करना संभव नहीं। लोकनाथ ब्रह्मचारी ने अश्विनी को अर्धमंत्र देकर कहा था कि एक पूर्णब्रह्म महापुरुष आएँगे एवं वे इस अर्धमंत्र को पूर्ण कर देंगे। इसके बाद तो तुम सबको पता है कैसे घटनाचक्र से मुंशीगंज में आंधी वाले रात को मेरे साथ अश्विनी का मिलना हुआ था।

कालिदास- तुम्हारे बोले गए कलम के पेड़ के संपर्क में वे क्या पूछ रहे थे?

श्रीश्रीठाकुर- वह साधक जिससे उस छोटी सी उम्र में मेरी मुलाकात कालिंपोंग में पहाड़ों की यात्रा के दौरान हुई थी, उससे ही इन तीनों ने कलम के पेड़ के संबंध में जानकारी प्राप्त की। पहाड़ों के जो बड़े बड़े साधक हैं वे मुझे समझ चुके, किन्तु कानून के पचड़े में पड़कर वे मेरे पास आ नहीं पा रहे। इसलिए वे तीव्र व्याकुलता के साथ कलम के पेड़ की अपेक्षा में ही राह देख रहे हैं। कुछ दिनों से मेरे सीने में भी उनकी आकुलता व्याकुलता आकर टकरा रही हैं। उनसे यही कहा मैंने। रात को जब मैं काम पर बैठता हूँ तब वह चीख, वह अर्जी समुद्र के लहरें जिस प्रकार तट पर आकर टकराती हैं ठीक उसी प्रकार मेरे हृदय में आकर उनका रोना टकरा रहा है। मैं तो प्रकृति के ऊपर ही सब छोड़कर बैठा हूँ। प्रकृति की ओर से किसी को भेजा गया तभी मैं बोल पाउँगा उनको। लेकिन कुछ कुछ पूर्वाभाष आ रहा है, जिससे उसके आने का एक आभाष पा रहा हूँ, ऐसा नहीं कि मैं अपनी इच्छा से कुछ कर रहा हूँ, प्रकृति की सुविधा के लिए जो होना है, वह होता चला आ रहा है। इस कलम के पेड़ को तैयार करने की मेरी यह इच्छा आज की नहीं। जिस बार पहाड़ों के सम्मेलन में मुझको ले जाया गया उस समय या उससे भी पहले से प्रकृति के अंदर एक आलोड़न चल रहा है। क्योंकि कलम के पेड़ का जो stage है वह साधारण चिंता से कल्पना भी नहीं किया जा सकता। मैं अगर कलम के पेड़ के रूप में किसी को तैयार करूँगा ऐसा मन ही मन स्थिर करूँ तो मेरे इस चिंता के साथ साथ वह ऐसा एक stage पाएगा जो साधारण चिंता

से कल्पना भी नहीं किया जाएगा। एक वाक्य में इतना ही बोल सकता हूँ कि इस पृथ्वी पर जहाँ तक आध्यात्मिक रूप से जा पाना संभव है, मेरा कलम का पेड़ शुरू ही करेगा उसके ऊपर से। फलस्वरूप यहाँ का जो कोई भी साधक क्यों न हो, यहाँ तक कि जो यहाँ साधना करके देवता का status पा चुके हैं, वे भी उसके पैर पड़ेंगे क्योंकि उसका status ही वैसा होगा। जो कार्य करने में बहुत दिन लगता है मैं अति सहज ही उसके लिए वह सब करके रखूँगा।

कालिदास- तुम तो हम सबके लिए ही निरंतर कार्य करते जा रहे हो, तो फिर कलम के पेड़ के क्षेत्र में जो कार्य करोगे और हमारे क्षेत्र में जो कार्य कर रहे हो — इन दोनों कार्यों के बीच का अंतर अगर तुम थोड़ा समझाकर बोलते।

श्रीश्रीठाकुर- तुम सबके लिए जो कार्य कर रहा हूँ वह यह है कि कैसे तुम सबके हज़ार हज़ार जन्मों के अपराधों का बोझा साफ करके तुम सबको एक जगह पर reach करवा दिया जाए। इस कार्य की ज़िम्मेदारी कोई भी नहीं लेगा — वो तो मैं हूँ कि शत लांछना गंजना सहकर भी तुम सबके लिए हरिजन का काम, गंदगी साफ करने का काम करता चला जा रहा हूँ। यह काम करने के लिए मैं बाध्य नहीं, किन्तु मेरे माया के कारण मैं यह काम कर रहा हूँ। यह मेरा काम नहीं। मैं जिस काम के लिए आया हूँ वह काम खत्म करके जाते समय यदि चाहूँ तो मेरे गाड़ी में तुम्हारे जैसे हज़ार हज़ार को भरकर ले जा सकता हूँ। यह संपूर्ण मेरे व्यक्तिगत खुशी के ऊपर निर्भर करेगा। और प्रकृति की ओर से जिस कलम के पेड़ को भेजा जाएगा, वहाँ भी मेरी ही खुशी कार्य करेगी — लेकिन उसका काम थोड़ा अलग तरीके से होगा। बचपन में एकबार याद है — मैं तब उजानचर कृष्णनगर में था। तब मेरी उम्र ८/९ साल होगी। मैं एक बाँस की झोपड़ी तैयार करके वहाँ रात को काम पर बैठता था। इस घर में रात को मनाई फ़कीर आता था, और भी अनेकों आते थे। एक रात बहुत बड़ा तूफान आया। तूफान थम जाने पर मनाई फ़कीर बाहर गया। कुछ क्षण बाद देखता हूँ कि मनाई फ़कीर ने गौरैया चिड़िया और उसके खूब छोटे छोटे तीन बच्चों को लाकर मेरे चरणों के सामने रख दिया। मेरे घर के पास पेड़ के नीचे उन्हें गिरा पड़ा देख मनाई फ़कीर अपने हाथों में उन्हें उठा ले आया। मैंने देखा कि माँ गौरैया पक्षी की हालत बहुत ही खराब है, शायद तूफान से बच्चों की रक्षा करते हुए स्वयं ही लगभग मरणापन्न हो गई। बच्चों को कहा जाए तो वैसा कोई ख़ास नुकसान नहीं हुँआ। मैंने देखा कि थोड़ी देर में माँ गौरैया पक्षी मर गई। मरने से पहले मेरी ओर इस तरह देखा जैसे मुझे बोल रही हो — तुम इन्हें देखना। मैं तो सोच रहा था कि अब क्या करूँ। मेरा तब प्रचंड कार्य का period चल रहा था — अब इन तीनों बच्चों की देखभाल करना पड़े तो मेरे लिए दूसरा काम करना थोड़ा कठिन हो जाएगा। इसलिए तनिक सोचकर मनाई फ़कीर को लोटे में थोड़ा पानी ले आने के लिए बोला। पास ही में तितास नदी था, फ़कीर दौड़कर गया लोटा भर पानी लाकर मुझको दिया। मैंने किया कि — एक एक करके पक्षी के बच्चों को अपने हाथों में लिया और उनपर थोड़ा थोड़ा पानी छिड़कने लगा और वे धीरे धीरे बड़े होने लगे। इस प्रकार ३/४ मिनटों में तीनों पक्षी बड़े हो गए। मनाई फ़कीर तो आश्चर्य भरी आँखों से देखता रहा! देखकर यह समझने का उपाय ही नहीं कि यह तीनों पक्षी कई मिनिट पहले एकदम नवजात शिशु थे, अब एकदम स्वाभाविक गौरैया पक्षियों के जैसे हो गए हैं। कुछ क्षण पहले जिनके पंख ही ठीक तरह से गठित नहीं हुए थे, वे अब सुंदर पंख लेकर मेरे घर के यहाँ से वहाँ उड़ रहे हैं। मैंने मनाई फ़कीर से कहा — सुबह होने

पर वे अपने आप ही उड़कर चले जाएंगे, उन्हें लेकर और चिंता नहीं करनी पड़ेगी। वह रात उन्होंने मेरे इस बाँस की झोपड़ी में ही गुज़ारी और सवेरे मनाई फ़कीर जब बाहर निकले तब फ़कीर के साथ साथ वे भी बाहर उड़ गए। तो फिर यही देखा जा रहा है, जिस स्टेज पर पहुँचने में बहुत समय लगता है इच्छा हो तो बहुत कम समय के अन्दर ही वहाँ पहुँचाया जा सकता है। गौरैया पक्षी जो बड़े अवस्था में उड़ गए स्वाभाविक नियम से उस जगह पर पहुँचने में उन्हें शायद और भी कई महीने लग जाते, मैंने कई महीनों के काम को तीन मिनिट के अन्दर कर दिया। आज कुछ दिनों से मानों विश्वप्रकृति भी उस गौरैया पक्षियों की माँ की तरह मेरी ओर लाचार आँखों से देख रही है और बोलना चाह रही है — प्रकृति से प्रेरित किसी को मैं अपने जैसा तैयार करूँ। इसलिए कोई यदि सचमुच प्रकृति की ओर से आकर उपस्थित होता है तब फिर मैं शायद उन तीन बच्चों की तरह उसके प्रति मेरे प्यार से बहुत जल्दी बहुत दिनों का काम कर दूँगा। यह ज़ोर करने का विषय नहीं, तुम्हारे भी सुनने की बात नहीं — यह मेरे व्यक्तिगत घराने की बात है। तुम जो मेरे मुँह से सुन रहे हो यह तुम सबका सौभाग्य है ऐसा ही बोलना पड़ेगा। एक समय पहले इस विषय पर बीच बीच में बात करता था। पहाड़ों के उस सम्मेलन से लौटने के बाद बोला था कलम के पेड़ की बात। ढाका के स्वामीबाग में नट के घर मैं बीच बीच में जाता था। एकदिन नट के घर पर मैं गया, मेरे साथ प्रियप्रसाद और रवि घोष भी थे। कुछ देर बाद देखता हूँ कि राम ठाकुर मुझे ढूंढने इस घर में आए हैं। राम ठाकुर मुझको 'नारायण' 'नारायण' कहकर पुकारते थे। उसने एक समय पहाड़ों पर बिताया था। उस दिन कलम के पेड़ के बारे में बात की थी। कहा था मैं मानों देख पा रहा हूँ की मेरे उस कलम के पेड़ के सामने विशाल विशाल महापुरुष भी हाथ जोड़कर खड़े हैं। रवि घोष को बहुत उत्साह था कलम के पेड़ को लेकर।

कालिदास- तुम्हारे पास आने के साथ साथ ही क्या कलम के पेड़ को यह status मिल जाएगा?

श्रीश्रीठाकुर- नाबालक के नाम पर पिता या माता बैंक में पैसा रखते हैं। लेकिन वह उस पैसे का तुरंत उपयोग नहीं कर सकता। प्राप्तवयस्क होने तक उसको इंतज़ार करना होता है। उसी प्रकार यदि मैं समझ सकूँ कि प्रकृति की ओर से ऐसे किसी को भेजा जा रहा है तो मैं अपनी खुशी से मेरे कलम के पेड़ का सिलमोहर उसे दे दूँगा। यह संपूर्ण मेरे मनोजगत की बात है। यह किसी को बताने वाली बात नहीं, जो कलम का पेड़ होगा वह भी नहीं जानेगा कि कितना बड़ा उत्तराधिकारी वह बन गया। कारण, जितना अधिक छुपाकर रखना संभव हो उतना ही बेहतर। जिनके लिए उसका आना, वे उसे ठीक ही पहचान लेंगे। तुम सब को समझाने तो वह नहीं आ रहा।

कालिदास- तुम जो यह छिपाकर रखनेवाली बात बोल रहे हो, ऐसा क्यों?

श्रीश्रीठाकुर- एक बहुत मूल्यवान चीज़ जब तैयार करने का काम चलता है तब काम की सुविधा के लिए थोड़ा छिपाकर ही काम किया जाता है। ये जो संतान दल बनाया है, उनके ऊपर दायित्व दिया है मेरे आदि वेद के तत्व को सबके समक्ष पहुँचा देने के लिये। वे तो स्वयं अनुसंधान करके तत्व की खोज नहीं कर रहे, वो केवल मेरे कथनों को पुस्तक के माध्यम से, कड़ा चाबुक के माध्यम से या भाषण के माध्यम से सामने रख रहे हैं। एक काम होता है अनुसंधान करके आविष्कार करना, और एक काम होता है उस आविष्कार को सबके सामने पहुँचा देना। यह जो शिवपुर कॉलेज में छात्रों को मास्टर पढ़ाते हैं — राय पढ़ाता है — अब उन मास्टरों ने तो स्वयं उन पुस्तकों के तत्वों की खोज नहीं की। किसी बड़े वैज्ञानिक ने वह आविष्कार किया है, अब मास्टर वह तत्व छात्रों

को पढ़ा रहे हैं। जो साधना कर रहे हैं विश्वतत्व को लेकर, इस क्षेत्र में भी ऐसी दो श्रेणियां देखी जाती है। एक दल नया नया रास्ता खोज रहे हैं, अन्य दल वह आविष्कृत पथ पकड़कर आगे चलते जा रहे हैं। अब यह जो पथ आविष्कार कर रहे हैं ::वेदवानी:: उनकी संख्या बहुत ही सीमित है, किन्तु वह पथ जो व्यवहार कर रहे हैं उनकी संख्या तो अनगिनत है। रेडियो तो एक व्यक्ति ने आविष्कार किया, किन्तु वह रेडियो कितने व्यक्ति आज व्यवहार कर रहे हैं तुम क्या वो संख्या बोल पाओगे? इस मुहूर्त में पृथ्वी पर कितने लोग रेडियो सुन रहे हैं किसी के लिए यह निर्धारण कर पाना संभव नहीं। ठीक उसी तरह इस विश्वतत्व के खदान में जो निरंतर डूबे रहकर नए नए मूल्यवान वस्तु निकालकर ला रहे हैं उनको Universe की ओर से बहुत बड़ा status दिया जाता है। हरिबंधु एकदिन बोल रहा था कि विदेश में जो अनुसंधान करते हैं उनको पढ़ाने का काम साधारणतः नहीं दिया जाता, उनको अनुसंधान के कार्य में ही रख दिया जाता है। वे अनुसंधान करके आविष्कार करते हैं एवं उनके वह आविष्कृत तत्व ही कॉलेज और विश्वविद्यालय में मास्टर पढ़ाया करते हैं। मास्टरों का जैसे पढ़ाना ही एकमात्र काम है, गवेषकों का वैसा नहीं। तब वे क्या पढ़ाते नहीं? हाँ, वे भी कभी कभार शौक से इस विश्वविद्यालय उस विश्वविद्यालय में दो दिन के लिए, तीन दिन के लिए पढ़ा आते हैं। मगर बस उतना ही, तत्पश्चात् वे दोबारा उनके अपने अनुसंधान में डूब जाते हैं। किन्तु वे जब पढ़ाने आते हैं तब उनका वह पढ़ाना सुनने अन्य मास्टर भी हाज़िर होते हैं, क्योंकि वे गवेषक तो उन मास्टरों से भी बहुत उपर हैं। मास्टर जो पढ़ाते हैं वह तो उन गवेषकों के द्वारा आविष्कृत तथ्य ही पढ़ाते हैं। इसलिए मास्टर भी तब छात्रों की तरह हाथ जोड़कर आते हैं उस गवेषक की बातें मन लगाकर सुनते हैं। राय उस दिन जैसे बोल रहा था कि कोई एक बहुत प्रसिद्ध वैज्ञानिक बाहर से उनके कॉलेज में आएगा, वह आकर उनके कॉलेज के मास्टरों का क्लास लेगा। तुम लोग जिसे आध्यात्मिक जगत बोलते हो वहाँ भी ऐसी घटना घटती है। जो Universe की ओर से यह अनुसंधान के लिए मनोनीत हैं, वे जहाँ जाते हैं सभी हाथ जोड़कर आकर खड़े हो जाते हैं — नया क्या सन्देश पाया गया वह तत्व ढूंढते रहते हैं। मेरे कलम का पेड़ जो होगा वह भी ऐसा ही एकजन होगा Universe का एक महाअनुसंधानकारी होगा जो Universal Mathematics में डूबा रहेगा। उसके काम के माध्यम से विश्व के लिए नए नए रास्ते निकल आएँगे। बड़े बड़े योगी ऋषि उनके निर्देशित पथ पर चलेंगे। अब उसको अगर २४ घंटा तुम लोगों के बड़बड़ाहट के बीच में रख दिया जाए, तब परिवेश का तो एक प्रभाव है — वह प्रभाव उसके जन्मजात प्रतिभा के ऊपर पड़ सकता है। इसलिए अपनी तरफ से उसे थोड़ा छिपाकर रखने की इच्छा है। एक अच्छे छात्र को जैसे माता पिता यथा संभव पढ़ाई का अवसर देना चाहते है — यह भी कुछ वैसा ही है। तुम लोगों की सोच तो युक्तफ्रंट, अजय मुखर्जी, कम्युनिस्ट, बंगला कांग्रेस — इन सबसे ऊपर उठ ही नहीं पा रहा। तुम सब एकदिन मर जाओगे यह तुम्हें चिंतित नहीं करता, इससे भी बहुत ज़्यादा चिन्तित करता है बेटे की नौकरी, बेटी की शादी, बीमारी इत्यादि। ऊपर से तुम्हारे यहाँ की भाषा है नहीं होगा, कर नहीं पाउँगा, बहुत कठिन है, हताशा, निराशा इत्यादि। अब तुम्हारे इस परिवेश में रहते रहते परिवेश की इस भाषा का प्रभाव मेरे कलम के पेड़ के उपर न पड़े इसलिए तुम सबके बीच में रखकर भी उसे थोड़ा अलग रखूँगा। तुम सब की तरह वेद प्रचार के कार्य में उसे ज़्यादा रखा नहीं जाएगा। लेकिन, कभी कभी अगर अपनी खुशी से वह कुछ करना चाहे तो वह उसका व्यक्तिगत विषय होगा। क्योंकि वह तो पथ पर चलने नहीं, वह पथ तैयार करने आ रहा है। जो उसका सान्निध्य पाएंगे उनका विशेष भाग्य

है — इसी प्रकार बोलना होगा। मैंने तो पहले ही कहा है पहाड़ों पर अभी भी बहुत बड़े बड़े कुछ योगी हैं जो उससे निर्देश पाने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। केवल यह पृथ्वी नहीं, अन्य जगत के योगी भी उसकी बात सुनेंगे। मैंने तो पहले ही कहा है जहाँ दूसरे समाप्त करते हैं मेरा कलम का पेड़ शुरू ही करेगा वहाँ से। उसका स्वाभाविक speed इतना ही ज़्यादा होगा की बड़े बड़े योगियों को जो काम पूरा करने में जन्म लग जाता है वह वो अत्यंत कम समय के अंदर ही समाप्त कर लेगा। इसलिए Universe के लिए वह एक महामूल्यवान विषयवस्तु है। बहुत कीमती हीरा जैसे बाज़ार के बीच में फेंककर रखा नहीं जाता — बहुत संभालकर, प्यार से छिपाकर ही रखा जाता है उसी प्रकार उसको भी रखने की इच्छा है।

राम नारायण राम

155, Park Street

23-9-1967

आज पाश्चात्य वैदिक समाज के कुछ पंडित श्रीश्रीठाकुर को उनके एक सभा में निमंत्रण करने के लिए पार्क स्ट्रीट के निवास पर आए हैं। उनके साथ श्रीश्रीठाकूर के ममेरे भाई सुधांशुमोहन भट्टाचार्य भी आए हैं। श्रीश्रीठाकुर ने सभी को आदरपूर्वक आसन ग्रहण करने बोलकर उन सबकी खोज खबर ली। पंडितों में से एक ने श्रीश्रीठाकूर को प्रणाम करके सभा का निमंत्रण पत्र एवं उसके साथ उपहार स्वरूप महामहोपाध्याय कुंजविहारी तर्क सिद्धांत का लिखा हुआ पुस्तक सांख्यदर्शन दिया। श्रीश्रीठाकूर पुस्तक को हाथ में लेकर बहुत मन लगाकर देख रहे हैं।

सुधांशु- यह पुस्तक जिन्होंने लिखा है वे पिताजी के शिक्षक थे। वे मेदिनीमंडल के निवासी हैं। हो सकता है तुमने भी उन्हें देखा होगा।

श्रीश्रीठाकुर- उसके (सुधांशु के) पिता यानी मेरे मामा हेरम्बनाथ तर्कतीर्थ तो बहुत बड़े पंडित हैं। जब मैं ढाका में था तो देखता था कितने दूर दूर से छात्र शास्त्र सीखने के लिए हेरम्बनाथ के पास आते थे। जिनका लिखा पुस्तक अभी मुझको दिया उन्होंने मामा को पढ़ाया है?

सुधांशु- पिताजी ने सबसे पहले मेदिनीमंडल के हेरम्बनाथ न्यायरत्न के अधीन अध्ययन किया। बाद में उन्होंने इनके यानी महामहोपाध्याय कुंजविहारी तर्क सिद्धांत से शिक्षा ग्रहण की। इनके पास न्यायशास्त्र का अध्ययन समाप्त करके ही उन्होंने तर्कतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। वे वैदिक समाज के बहुत बड़े पंडित थे। वे पूरे भारत में प्रसिद्ध थे। स्वाधीनता से पूर्व विभिन्न देशीय राजाओं के राजसभाओं में न्यायशास्त्र की विचारसभा आयोजित होती थी, वहाँ विचारक के रूप में उन्हें ले जाया जाता था। एक समय वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के न्यायशास्त्र के एम ए परिक्षा के पेपर सेटर एवं परीक्षक के काम से भी जुड़े थे। उनकी लिखी पुस्तक तत्वबोधिनी टीका कलकत्ता विश्वविध्यालय में एम ए के पाठ्यपुस्तक के रूप में पढ़ाई जाती है।

श्रीश्रीठाकूर- सुनकर बहुत खुश हुआ। बचपन से ही हमारे परिवार में शास्त्र का अनुशीलन देखता आ रहा हूँ। ढाका में देखा है ज़मीदार योगेश दास मामा को बड़ी श्रद्धाभरी नज़रों से देखते थे। भोलागिरि के आश्रम में जब स्नान करने जाता था तब बीच बीच में देखता था अनेक पंडित मामा को घेरे हुए बैठकर शास्त्र की व्याख्या सुन रहे हैं। (इस समय आए हुए अतिथियों के लिए नाश्ते की व्यवस्था की गई। नाश्ते के दौरान श्रीश्रीठाकुर ने आए हुए सभी अतिथियों की खोजखबर ली। नास्ता समाप्त होने जाने के बाद पंड़ितों ने श्रीश्रीठाकुर को उनकी सभा में योगदान करने के लिए बार बार अनुरोध किया और चले गए।)

श्रीश्रीठाकुर ने उपहारस्वरूप मिला पुस्तक कालिदास को देकर उसे संभालकर रखने को कहा। पुस्तक को रखकर कालिदास ने पूछा — तुम क्या वैदिक समाज के सभा में जाओगे?

श्रीश्रीठाकुर- देखता हूँ, यदि समय मिला तो जाऊँगा। दर्शनशास्त्र को लेकर एक समय ड: महेन्द्रनाथ सरकार के साथ बहुत आलोचना होती थी। वे एवं उनकी पत्नी मुझसे बहुत ही प्यार करते थे। उन्होंने तो एक पुस्तक भी लिखा है मुझे लेकर, क्या एक नाम है उसका।

कालिदास- श्रीमद् बालक ब्रह्मचारी दर्शनसार।

श्रीश्रीठाकूर- हाँ। ड: महेन्द्रनाथ सरकार शंकराचार्य के भक्त थे। शंकराचार्य के दर्शनशास्त्र के ऊपर ही उन्होंने कार्य किया है। एक दिन बोले आपका यह तत्व समझ पाना आसान नहीं, यदि आपके पास शंकराचार्य जैसे कई व्यक्ति होते तो वे आपको थोड़ा समझ पाते। समझो, वे स्वयं शंकराचार्य के भक्त हैं — उन्होंने यह नहीं कहा कि आप शंकराचार्य के समतुल्य हैं, बल्कि कह रहे हैं कि शंकराचार्य जैसे कुछ लोग मेरे पास रहना ज़रूरी था। डा. महेन्द्रनाथ सरकार साधारण दार्शनिक नहीं थे — देश विदेश में उनकी पर्याप्त प्रतिष्ठा थी। मुझसे बहुत ही प्यार करते थे।

कालिदास- यहाँ के दर्शनशास्त्र को लेकर तुम्हारे साथ उनकी क्या चर्चा हुई थी?

श्रीश्रीठाकूर- मैंने कहा था, देखिए यहाँ का कोई भी दर्शनशास्त्र पढ़ने का समय मेरा नहीं हुआ। बचपन से विश्व का जो सुर लेकर मैं आया हूँ उसी सुर में मैं डूबा हुआ हूँ। आपके जैसे पाण्डित्य की भाषा शायद न हो मेरी लेकिन मैं विश्व के खदानों से अमुल्य रत्न निकालकर ला सकता हूँ। वह सुर विज्ञान, युक्ति, गणित से भरपूर है। मैं अनावश्यक भाव उत्तेजना की बात बोलकर क्षणिकभर की प्रशंसा बटोरना नहीं चाहता। यहाँ जो भी जो कुछ बोलकर गया है अधिकतर कल्पना और अनुमान के ऊपर आधारित है। थोड़ा नज़र डालने से ही पता चलता है कि इसमें प्रत्यक्षता का अभाव है। जिस विषय में प्रत्यक्ष दर्शन का अनुभव होगा उसका सुर ही अलग होगा। मान लो किसी को जन्म से ही एक कमरे में कैद करके रखा गया हो। उसे कभी भी बाहर नहीं जाने दिया गया। उस कमरे में केवल छत के पास एक छोटी सी खिड़की है हवा के आवागमन के लिए। उस खिड़की से बाहर का आकाश बहुत ही कम दिखाई देता है। जन्म से उसे इसी तरह रख दिया गया है। उसके जीवनधारण के लिए भोजन की व्यवस्था की गई है लेकिन उसे कभी भी बाहर नहीं ले जाया गया। अब वह व्यक्ति बाहर की जितनी भी जानकारी पाता है वह पूरा ही उस छोटी सी खिड़की से आकाश की ओर देखकर। कभी कभी नीले आकाश में हल्के बादल देख पाता है, कभी कभी किसी पक्षी की आवाज कानों में आती है। उस घर के करीब यदि कोई वृक्ष हो तो शायद उस वृक्ष की टहनी या पत्ते भी वह देख पाता है। अब यह व्यक्ति इतना सामान्य दृश्य देखकर बाहर की वर्णना कैसे करेगा? जो वृक्ष का एक पत्ता छोड़ और कुछ भी नहीं देख पा रहा उसके लिए क्या संम्पूर्ण वृक्ष का चित्र बनाना सम्भव है? जिसने कभी पक्षी नहीं देखा वह केवल पक्षी की आवाज़ सुनकर उसके स्वरूप का वर्णन कर पाएगा? ठीक उसी तरह यहाँ के जितने बड़े बड़े दार्शनिकों, साधकों के नाम तुम सुनते हो सभी एक प्रकार बन्दी अवस्था में हैं — यानि जन्म और मृत्यु के चक्र में आबद्ध हैं। जो स्वयं कैद में है वह बाहरी दुनिया का वर्णन कैसे करेगा? यहाँ के दार्शनिकों की हालत उस कमरे में कैद व्यक्ति जैसी है। कोई उस छोटी सी खिड़की से मानसून के बादलों से ढके आसमान को देखकर बोल बैठा कि बाहर आकाश का रंग काला है, कोई शरतकाल का आकाश देखकर बोला आकाश का रंग नीला है। जो जिस समय उपस्थित है उस समय के अनुसार जितना झलक पा रहा है उसी के आधार पर संपूर्ण की वर्णना करने जा रहा है और यहीं पर गलती हो रही है। बाहरी दुनिया का सच्चा चित्र तो कोई भी सटीक रूप से चित्रित नहीं कर पा रहा है! बाहर की स्थिति के बारे में एकमात्र वही यथार्थ बोल पाएगा जो बाहर से उस कमरे में प्रवेश करेगा, अर्थात जो कैद नहीं — मुक्त

पुरुष है। इसलिए एकमात्र जन्मसिद्ध के लिए ही शाश्वत सत्य का संदेश दे पाना संभव है, यहाँ के किसी और के लिए नहीं। कारण जो सत्य का संधान देंगे वे तो स्वयं ही जन्म मृत्यु के चक्र में कैद हैं! वे तो जन्म ले रहे हैं और मर रहे हैं, दोबारा जन्म ले रहे हैं दोबारा मर रहे हैं — इसके बाहर तो वे निकल नहीं पा रहे हैं। वे तो मुक्त पुरुष नहीं है इसलिए वे किस प्रकार कभी भी बाहर जाए बिना ही बाहर का परिपूर्ण तस्वीर सामने ला पाएंगे? इसी वजह से उनको कल्पना का सहारा लेना पड़ा और इसके फलस्वरूप आज विभिन्न धर्मों के बीच इतना विवाद है। जो जन्मसिद्ध होकर आए हैं क्योंकि वे जन्म मृत्यु के चक्र के बाहर से आए हैं इसलिए, एकमात्र उन्हीं के लिए इस विश्वप्रकृति का सटीक तत्व बोल पाना संभव है, इस अनन्त महाकाश का दर्शन यथार्त रूप से सामने ले आना एकमात्र उन्हीं के लिए संभव है। तुम्हारे ठाकूर बचपन से ही अनन्त विश्व का वह सत्यसुर की वीणा अविराम बजाते आ रहे हैं। मैं उस परमानन्द के सुर में तुम सब को पहुँचा देना चाहता हूँ। इसलिए ही दिन रात मैं इतना परिश्रम कर रहा हूँ। तुम सब तो यह समझ नहीं पा रहे हो मैं तुम सबके लिए क्या करता रहा हूँ। तुम सब भी तो उस कमरे में कैदियों जैसी अवस्था में पड़े हुए हो। यहाँ के छोटे से आनन्द से ही तुम पागल हुए जा रहे हो, बाहर जो इसके अनन्तकोटि गुना आनन्द का महासागर पड़ा हुआ है वह समझ नहीं पा रहे हो क्योंकि तुम्हारे कोटि कोटि जन्मों के अपराधों का बोझा जमा हुआ है, वह बोझा का ताप ही तुम्हारे सत्य के समझने के पथ पर बाधा बनके खड़ा हुआ हैं। मैं दिन रात एक ही चिन्ता करता जा रहा हूँ — किस प्रकार तुम सब के कोटि कोटि जन्मों के अपराधों का बोझा साफ करके उस कैद की हालत से अर्थात यह जन्म मृत्यु के चक्र से बाहर निकाला जाए। मैं तुम सबका कितना बड़ा परममित्र हूँ वह तुम सब समझ भी नहीं पा रहे हो। तुम्हारे सामान्य मांगो की पूर्ति के लिए मुझको मान अभिमान के बीच डाल रहे हो। तुम सब यदि यह विश्वतत्व समझ ले सकते तो तुम्हारे लिए मेरे काम को समझ पाना सहज हो जाता। मेरे इस कष्ट के बारे में किसी को बोल नहीं पा रहा। मैं जिस विश्वतत्व के महासागर से आया हूँ वहाँ विश्वप्रकृति के किसी भी कानून के अधीन मैं नहीं। किंतु देह धारण करके यहाँ आकर मैं कानून मानकर चल रहा हूँ। जितने दिन देह में रहूँगा उतने दिन मुझे कानून का पालन करना होगा। इसी को मैं विश्वप्रकृति का रिकार्ड बोलता हूँ। यह रिकार्ड मुझे ठीक रखकर जाना होगा। किसी भी परिस्थिति में मैं मेरे इस लाईन से नहीं हटूँगा। इस वजह से तुम यदि मुझे गलत समझकर मुझसे दूर हट जाओ तो भी मेरे कुछ करने का नहीं। तुम सबको खुश करने के लिए मैं मेरे इस युनिवर्स के रिकार्ड को नष्ट होने नहीं दे सकता। अब अगर तुम्हारी खुशी के बारे में सोचकर मैं काम करूँ तो फिर जिस दिन तुम्हारी समझ खुलेगी उस दिन तुम सब ही फिर मुझसे बोलोगे — हम तो अज्ञानी थे, तुम क्यों हम जैसे अज्ञानियों की बात मानकर चले? इसलिए मुझे मेरे विश्व के कानून के रास्ते पर ही चलना होगा। अभी मैं रिकार्ड के बीच हूँ इसलिए तुम मुझे जब चाहो करीब पा रहे हो, मगर जब यह रिकार्ड का अंत करके जाऊँगा तब ऐसे एक सुक्ष्मचेतना की अवस्था में चला जा सकता हूँ जहाँ मुझ तक पहुँच पाना किसी के लिए भी संभव नहीं।

कालिदास- तुम हमें छोड़कर चले जाओगे तो हमारा क्या होगा?

श्रीश्रीठाकूर- यहाँ पर छोड़कर जाने की बात नहीं आ रही है, मैं पहुँच के बाहर रहने की बात बोल रहा हूँ। जैसे यहाँ जो व्यक्ति मारा जाता है, यह जो तिलू चला गया, द्विजेन चला गया — यह चले जाना मतलब तो एकदम हमेशा के लिए चले नहीं गए — कहीं न कहीं तो वे अवश्य ही हैं। मगर जहाँ कहीं भी क्यों न हो तुम तो तिलू या

द्विजेन को अब अपने पहुँच के अन्दर नहीं पा रहे हो। अभी पहुँच के अन्दर नहीं पा रहे हो इसलिए वे नहीं हैं ऐसा तो नहीं। वे अवश्य ही हैं। तुम्हारे पुकार वे अवश्य ही सुन पाते हैं मगर तुम्हारे पकड़ में आ सके इस प्रकार से आ पाना उनकी क्षमता में नहीं इसलिए वे आ नहीं पाते। विदेश में अगर तुम्हारा कोई रिश्तेदार रहता हो तुम तो उसको इच्छामात्र करीब नहीं पा सकते। पासपोर्ट विज़ा करना पड़ेगा, जहाज़ का टिकिट काटना पड़ेगा — उसके बाद वह आ पाएगा। अब यह पासपोर्ट, टिकिट की व्यवस्था या तो उसे खुद कर लेना पड़ेगा, नहीं तो उसकी तरफ से तुम्हें करना पड़ेगा। किसी न किसी को तो करना पड़ेगा, तभी उसके साथ तुम्हारा साक्षात्कार हो पाएगा। ठीक उसी तरह जो यहाँ से चले गए हैं उनके साथ साक्षात्कार की व्यवस्था करना हो तो या तो उसको नहीं तो तुमको इसकी व्यवस्था करनी पड़ेगी। अब जो आएगा एवं जिसके पास आएगा दोनों ही अगर खूब गरीब हो तो यह पासपोर्ट, टिकिट की व्यवस्था कैसे होगी? इसलिए वे तुम्हारे पास आकर खड़े नहीं हो पा रहे — कारण उनकी भी आने लायक पूँजी तैयार नहीं हुई, तुम्हारे पास भी इतनी पूँजी नहीं कि वह पूँजी देकर उसको लाने की व्यवस्था की जाए। इस परिस्थिति में यही बोलना होगा कि वे अवश्य ही हैं पर तुम्हारे पहुँच के बाहर रह गए हैं। मैं जब चला जाऊँगा मेरी इच्छा होने पर ही मेरी पूँजी का उपयोग करके तुम्हारे साथ आकर मिल पाऊँगा। किन्तु किसी के साथ यदि मैं अपनी इच्छा से मिलूँ तब जिससे नहीं मिला वह दुखी हो सकता है। जैसे अगर मैं शिवपुर के राय से मिलकर आऊँ तो कालिदास को दुख हो सकता है कि ठाकूर मुझसे नहीं मिले। इसलिए तब मैं मेरी यह इच्छा मेरे हाथों में नहीं रखकर तुम्हारे बुलावे के ऊपर ही छोड़ दूँगा। जो मुझे बुलाकर ले जा पाएगा उसी के पास मैं जाऊँगा। लेकिन अभी जिस प्रकार मुझे पा रहे हो, चार आना आठ आना खर्चा करके जब चाहो पार्क स्ट्रीट में आकर मुझसे मिल पा रहे हो वैसा नहीं होगा। मैं इस महाकाश के महाचैतन्य में जहाँ लीन रहता था उस सुर में ही मेरी सत्ता महाकाश होकर लीन रहेगी। अभी की तरह तुम सब इतनी आसानी से मुझ तक पहुँच नहीं पाओगे। तुम्हारे पहुँच के बाहर हूँ इसलिए मैं नहीं हूँ, ऐसा तो नहीं। मैं सदा सर्वदा ठीक ही रहूँगा। यह जो अगरबत्ती कुछ देर पहले भी जल रही थी तब तो धुआँ दिख रहा था, गंध सभी को आ रही थी। कुछ देर पहले बुझ गयी। अब धुआँ नहीं दिख रहा, लेकिन गंध अभी भी थोड़ी सी आ रही है। और भी कुछ देर बाद गंध भी नहीं मिलेगी। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि गंध पूरी तरह से चली गयी? तुम्हारे नाक की पहुँच से बाहर चले जाने पर भी बहुत सूक्ष्म आकार में तब भी कुछ गंध इस हवा में घुली रहेगी। तुम हो सकता है कि तब वह गंध नहीं पा रहे हो पर ऐसे क्षुद्रातिक्षुद्र प्राणी हैं जो उस अगरबत्ती का गंध तभी भी पा रहे हैं। उसी प्रकार मेरी चेतना भी मेरा देह छोड़कर जाने के बाद परिपूर्ण जागृत अवस्था में ही रहेगी अभी की तरह लेकिन ऐसे सूक्ष्म आकार में चली जाएगी कि तुम्हारे पहुँच से बाहर रहेगी। तुम लोगों की तरह दर्शन देना हो तो बहुत ही स्थूल रूप में नीचे उतरकर तब दर्शन देना होगा। वाष्प वैसे देखा नहीं जा सकता, जब वही वाष्प बर्फ आकार में रूप लेता है तब उसे देखा भी जा सकता है, स्पर्श भी किया जा सकता है — यह भी काफी हद तक वैसा है। इसलिए तुम्हारे साथ मैं ठीक ही रह जाऊँगा पर तुम अभी जिस तरह मुझे देख रहे हो उस तरह कभी कभी मेरा दर्शन पाने से भी हमेशा नहीं पाओगे। यह केवल तुम्हारे लिए ही सत्य नहीं, जो इस यूनिवर्स में बहुत बड़े बड़े हो गए हैं उनके लिए भी यह सत्य है। क्योंकि मैं उनकी चेतना से भी बहुत ऊँचा हूँ, बहुत सूक्ष्म हूँ फलस्वरूप वे भी बहुत सूक्ष्म अवस्था में अवस्थित होकर भी मुझ तक पहुँच नहीं पाएंगे। :: वेदवाणी :: मेरी चेतना को इस विश्व में शुन्यवत

कहा गया है। जो बहुत ऊँचे उठ गए हैं, बहुत बड़े बड़े हो गए हैं, उन्हें भी मेरे अस्तित्व तक की पहुँच नहीं मिल रही है। क्योंकि जिस सूक्ष्मता तक उनका अस्तित्व अखंड रहता है मेरा अवस्थान तो उससे भी बहुत ऊपर है। फलस्वरूप उनका अस्तित्व ही विघ्नित हो जा रहा है। जिस विषयवस्तु से जल के अणु बने हैं, जल के लिए उस विषयवस्तु को ग्राह्य में लाना संभव नहीं — क्योंकि जल उस अवस्था पर जाने से जल नहीं रहता, अन्य कुछ में रूपान्तरित हो जाता है। अब स्वयं का अस्तित्व ही यदि न रहे तो और किसको वह पकड़ेगा, किसका ही वह ध्यान करेगा! इस चिंता से ही तो कलम के पेड़ का विचार आया है। यह कलम के पेड़ के रूप में जो आएगा वह सर्व अवस्था में ही मुझको अपने पहुँच के अन्दर ला पाएगा। जितने भी सूक्ष्म में मैं क्यों न चले जाऊँ, एक ऐसा सूक्ष्मतम अवस्था आ सकता है जहाँ तक की पहुँच शायद कोई भी नहीं पाएगा — वहाँ पर भी वह स्वमहिमा में स्थित होकर मेरे साथ आदान प्रदान में रहकर communication जारी रख पाएगा। जो देवता बन गए हैं वो तब इस कलम के पेड़ से मेरा संदेश जान पाएंगे। इसलिए कलम का पेड़ जन्म लेगा उनकी ही ऐकान्तिक इच्छा से। पहाड़ों में जो निरंतर काम कर रहे हैं वे भी तो हाथ जोड़कर बैठे हैं उसके लिए। १९३८ या ३९ साल में गैंगटोक से और आगे पहाड़ों के तरफ गया था। उसबार लौट कर चंद्रनाथ पहाड़ पर गया था। वहाँ से सीताकुंड होते हुए मौसा के घर चट्टग्राम में आकर देखा रवि घोष और काला डॉक्टर मुझसे मिलने के लिए मौसा के घर पर आए हैं। मेरे साथ तब चन्द्रनाथ पहाड़ से एक शिव भक्त भी साथ साथ आया था। उन्हें बोला था — मेरा संतान पृथ्वि पर बड़े बडे योगियों से पूजा पाएगा। यहाँ सभी काम करते हैं, किन्तु वह जो करेगा वैसा और कोई कर पाएगा कि नहीं मैं नहीं जानता। उसका काम होगा आत्माजगत का काम, वास्तवजगत का काम जो तुम समझ सकते हो वैसे काम में उसको रखने की मेरी एकदम ही इच्छा नहीं। यहाँ की सामान्य बुद्धि से शायद तुम उसे समझ नहीं पाओगे। उसकी सामान्य खुशी से बहुत योगी एवं साधक इस अनन्त विश्व के अनेक अनजाने महामूल्यवान आश्चर्यचकित करने वाले परम संपद का संधान पाने में सक्षम होंगे। उसकी खुशी में मैं भी हस्तक्षेप नहीं करूँगा। मेरा संतान है इसलिए नहीं बोल रहा, मेरे उस संतान के सान्निध्य में जो आ पाएंगे वे विशेष भाग्य के अधिकारी हैं इसी प्रकार मैं इस विषय को देखता हूँ। पहाड़ पर जो कानून के कारण मेरे पास आ नहीं सके, वे अधीर आग्रह से मेरे उस संतान के आने की राह देख रहे हैं। सूर्य की ओर देखा नहीं जा सकता, लेकिन देखो तो उसी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित चंद्र उसके तरफ तो कितना सुंदर देखा जा सकता है। रात के समय जब सूर्य का प्रकाश नहीं रहता तब चाँद के माध्यम से ही सूर्य उसका प्रकाश प्रदान करता है। मेरा संतान भी मेरे प्रकाश से प्रकाशित होकर पहाड़ के योगियों को वह परम तत्व रुपी प्रकाश दान करेगा। वे उसकी पूजा करके बोलेंगे — इस गहरी रात में हम सब आशा कर रहे हैं प्रातःकाल सूर्य का दर्शन पाएंगे। लेकिन जब तक उस सूर्य का दर्शन न हो जाए तब तक उनके उस परम प्रकाश का संधान हमें तुम से ही लेने दो। तुम तो चाँद बनकर उस सूर्य को ही अपने हृदय में धारण करके चल रहे हो। आशा हम रख रहे हैं कि भोर होगा, सूर्य उदय होगा — लेकिन ऐसा कब होगा वह तो हम नहीं जानते। इतने हज़ार हज़ार जन्मों से तो इसी अंधकार में जीवन बिता रहे हैं। बहुत युगों के बाद अब जब प्रकाश का संधान मिला है तब दया करके उससे हमें वंचित न करें। (श्रीश्रीठाकूर इस समय थोड़ा अन्यमनस्क हो गए।) बहुत हज़ार साधकों के एवं योगियों के, यहाँ तक कि देवताओं के भी आकुल व्याकुल चीख

— केवल इस पृथ्वि के ही नहीं, अन्यान्य जगतों के भी — उनकी आकुल पुकार कुछ दिनों से ही आकर मेरे सीने से टकरा रहीं हैं। तुम लोग मुझे थोड़ा समझने की कोशिश करो।

राम नारायण राम

তাঁর প্রাণের বাবনের সঙ্গে শ্রী শ্রী ঠাকুর

155, Park Street

26-9-1967 (रात्रिबेला)

श्रीश्रीठाकुर आत्ममग्न होकर मनाई फ़कीर का गाया अल्लाह तल्लाह का गाना गा रहे हैं। कुछ देर तक गाने के बाद वे बोले — मनाई फ़कीर बहुत सुन्दर गाता था। एकदम मग्न रहता था।

कुसुमदी एवं कालिदास- और थोड़ा गाओ, बहुत अच्छा लग रहा है।

श्रीश्रीठाकुर ने और कुछ देर तक गाना गाया फिर बोलना शुरू किया — मनाई फ़कीर देर रात को मेरे पास आकर बैठता था। तब मैं ५-६ साल का था। मैंने बाँस का एक छोटा सा घर बनाया था। वो जगदीश हाईरा, उसके बाद अजित नमः, निकुन्ज भुईमाली और ऐसे कुछ अन्य लोगों ने मिलकर यह घर तैयार किया था। मैंने भी उनके साथ हाथ लगाया था। इस घर में सारी रात बैठा रहता था, जगदीश हाइरा और अन्य कुछ लोग भी कभी कभी आकर बैठते थे — कभी कभी वे धूना जलाते थे। मनाई फ़कीर भी देर रात को इस घर में आकर बैठता था। अलाऊद्दीन, अफताबुद्दीन — इनका गुरु था मनाई फ़कीर। मनाई फ़कीर बहुत बड़ा साधक था, लोकनाथ ब्रह्मचारी का मित्र था। चन्द्रनाथ पहाड़ में लोकनाथ के साथ मनाई फ़कीर का मुलाकात हुआ था। मनाई फ़कीर सारा दिन हमारे घर से कुछ दूरी पर एक सुपारी का बगीचा था, वहीं रहता था। वह देर रात को मेरे घर में आकर बैठता था। मैं सारी रात बैठता था, मनाई फ़कीर भी बैठा रहता था — भोर होते ही वह उस सुपारी के बगीचे में चला जाता था। उस समय रात को कुछ साँप और लोमड़ियाँ मेरे पास आकर बैठती थीं। एक बहुत बड़ा साँप था। मेरे मिट्टी के घर के फर्श पर एक गड्ढ़ा जैसा था, उसने तो वहीं पर रहना शुरु कर दिया। जैसे ही मैं काम करने बैठता था तो वह साँप धीरे धीरे गड्ढे से निकल आता और मेरे पास बैठ जाता। वर्षाकाल में एकबार बहुत बारिश हो रही थी — तब गहरी रात थी, मनाई फ़कीर ने देखा एक वृद्ध आँख बंद करके मनाई फ़कीर के पास बैठा हुआ है। प्रात: उस वृद्ध ने जब आँखें खोली तो मनाई फ़कीर ने उनसे पूछा — आप कौन हैं? उस वृद्ध ने तब कहा — मेरा नाम जगदीश है। मनाई फ़कीर ने तब पूछा — आप यहाँ कहाँ से आए हैं? उस वृद्ध ने उत्तर दिया — मैं इस परिवेश में ही घूमता फिरता हूँ, कब कहाँ रहता हूँ कोई ठीक नहीं। मैं इस छोटे से बालक से आकर्षित हो खींचा चला आता हूँ। यह छोटा बालक जब काम पर बैठता है तब एक ऐसी ज्योति प्रकाशित होती है जिसका संधान मैंने आज तक कहीं भी नहीं पाया। यह ज्योति इस बालक की स्वयं की संपत्ति है ऐसा प्रतीत होता है। मनाई फ़कीर चुप करके उस वृद्ध कि बात सुनता रहा। सफेद केश, सफेद दाढ़ी, उस वृद्ध का चेहरा अति अपूर्व था। इस प्रकार प्रायः वह वृद्ध तब आता था।

कालिदास- तुम जिस वृद्ध की बात कह रहे हो वे क्या स्वयं महादेव हैं?

श्रीश्रीठाकुर- यह मैं कैसे बोल सकता हूँ? मनाई फ़कीर होता तो उसे पूछ सकते थे।

कुसुमदी- उस दिन तो सुखचर के निवास में जाकर शिव मन्दिर के सामने शिव के सम्बन्ध में तुमने कितना कुछ बोला।

श्रीश्रीठाकुर- शिव ने तुम्हारे जैसे ही एक साधारण घर में जन्मग्रहण किया था, तत्पश्चात् स्वयं की साधना के बल पर बहुत ऊँचाई पर उठ गए। ऐसा होते सहसा देखा नहीं जाता। कितने प्रतिकुल परिस्थितियों से गुज़रे, परन्तु कभी भी पीछे नहीं हटे। इसीलिए शिव को इतना बड़ा स्थान दिया गया है, उन्हें देवादिदेव महादेव कहा जाता है।

कालिदास- वह शिव क्या अभी भी साधनारत हैं?

श्रीश्रीठाकूर- इस विश्वब्रह्मांड के कार्य में सभी को सम्मिलित होना पड़ता है। एक एक अवस्था में एक एक चेतना के प्रकाशन के मध्य से सभी को गुज़रना पड़ता है। विभिन्न समय पर हर कोई अपने मात्रानुसार भिन्न प्रकार के कार्य करता है। यही शिव एक समय पर समाज गठन के कार्य में नियुक्त थे। त्रिशूल से पत्थर उठा उठा कर कितने ही ज़मीन को उन्होंने खेती के उपयुक्त तैयार किया था, स्वयं को लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया था। किन्तु गहरी चेतना की अवस्था में निमज्जीत होकर एक ऐसे पथ का संधान पाया जहाँ पहुँच कर शिव की कर्मधारा एकदम ही परिवर्तित हो गयी। तत्पश्चात् शिव की कोई खोज न मिल पाई, इसी हिमालय की ओर ही अपना शेष जीवन साधना में व्यतीत कर दिया।

कालिदास- यदि थोड़ा और समझाकर बोलते।

श्रीश्रीठाकूर- तुम जब किसी डाक्टर के पास व्यथा वेदना लेकर जाते हो तब इस व्यथा के निवारण हेतु औषधि दिया जाता है। एक है तत्कालीन दर्द से राहत दिलाने की व्यवस्था करना, और उससे भी जो बड़ा डाक्टर है वह केवल दर्द का अस्थायी उपचार न करके उस बीमारी को मूल से ही उन्मूलन करने की व्यवस्था करता है। Pain Killer देकर सामयिक व्यथा वेदना का उपशम करना बड़ा कार्य है या एकदम कभी भी यह रोग दोबारा न हो इसकी व्यवस्था करना बड़ा कार्य है? निश्चित रूप से रोग को मूल से उन्मूलन करना बड़ा कार्य है, है ना? इसलिए यहाँ के रोग शोक का इलाज करना Pain Killer देकर सामयिक रूप से दर्द को कम करने की कोशिश करने जैसा है, और जो उससे भी बड़ा है वह चाहेगा किस प्रकार हमेशा के लिए रोगमुक्त किया जाय, ताकि दोबारा कभी भी इस रोग के चपेट में ना पड़ना पड़े। इसलिए शिव भी एकदिन बैठ गए उस परम समाधान की तलाश में, जिस सुर को पाकर और कभी भी इस पृथ्वि की व्यथा वेदना के चक्र में न पड़ना पड़े। उसी चिरयुग के परम समाधान की खोज में शिव ने स्वयं को आत्मोत्सर्ग कर दिया। उन्होंने यह देखा कि यहाँ के रोग शोक अभाव अभियोग को दूर करना जितना ज़रूरी है ठीक वैसे ही किस प्रकार हमेशा के लिए इन समस्याओं के हाथ से छुटकारा पाया जाय उसकी कोशिश करना भी उतना ही ज़रूरी है। गहरी साधना में डूबे रहकर उन्होंने इस विश्वसृष्टि के आदि सुर के संधान में स्वयं को छोड़ दिया। यह व्यथा क्यों, यह वेदना क्यों, यह आघात क्यों — इसके द्वारा प्रकृति के आदि सृष्टि रहस्य का क्या संदेश हम तक पहुँच रहा है इस खोज के पथ पर वे आगे चल पड़े। (इस समय श्यामबाज़ार के घर से एक फोन आता है एवं श्रीश्रीठाकूर फोन पर कुछ देर तक बात करते हैं।)

श्रीश्रीठाकूर- माँ के पेट में एक दर्द सा हो रहा है इसलिए दिजू ने फोन करके यह सूचित किया। मैं क्या कह रहा था?

कालिदास- शिव की बात कह रहे थे।

श्रीश्रीठाकूर- न केवल शिव बल्कि और भी जो बड़े बड़े हो गए हैं वे भी सृष्टि रहस्य के गहरे सुर में डूबे हुए हैं। बचपन में जब मैं काम पर बैठता था ऐसे अनेक मुझसे मिलने आते थे। मैं जो आया हूँ, मेरे स्वयं की खुशी से मैं आया हूँ — अनेकों के अनुरोध से आया हूँ, जिससे वे यह देख पाएं कि देह धारण करके, बहुत निम्न मात्रा से शुरू करके भी किस प्रकार उस परम सुर की मात्रा तक पहुँचा जा सकता है। मेरे स्वयं की मात्रा से बहुत नीचे उतरकर मुझे आना पड़ा है। उस निम्न मात्रा से शुरु करके किस प्रकार दोबारा पूर्ण मात्रा में पहुँचा जा सकता है यह कार्य मैंने ५/६ वर्ष की आयु से शुरु करके २०/२१ की आयु के अन्दर ही करके दिखाया है। सभी हैरान हो गए। लेकिन एक प्रश्न मुझसे किया ही जा सकता है। जितने भी निम्न मात्रा में मैं स्वयं को गिरा क्यों न लूँ मेरी जो सहज समझ है वह तो मेरे साथ साथ ही रह गयी है। जिस प्रकार दीवार के उस पार अगर कोई आग हो तो उसकी गर्माहट दीवार को भेदकर दूसरी ओर भी पहुँच जाती है। यह भी वैसा ही है। मेरे सहज समझ की जो ऊष्मा है वह ऊष्मा तो अपना प्रकाश निरंतर करती चली जा रही है। बचपन में एक बार स्कूल की परीक्षा के दौरान एकजन मेरे पास आया परीक्षा में क्या क्या प्रश्न आए हैं यह पूछने के लिए। मास्टरजी ने प्रश्नपत्र तैयार करने के लिए उसकी किताब ली थी। मैंने कहा तुम किताब ले आओ। हमारे वह मास्टरजी तम्बाकू का सेवन करते थे। मैंने उसकी किताब ढूंढ ढूंढ कर कहीं हाथ की हल्की सी छाप, थोड़ा सा तम्बाकू का निशान, किताब के किसी पन्ने के ऊपर कागज रखकर प्रश्न लिखे जाने जैसे चिन्ह देख देखकर ७/८ प्रश्न उसको बता दिये, उसने देखा कि ठीक वही ७/८ प्रश्न परीक्षा में आए। लेकिन यहाँ मैंने कोई भी आध्यात्मिक क्षमता का प्रयोग नहीं किया, केवल मेरी समझ का यंत्र इतना परिपक्क है कि जो साधारणों की आँखों में आसानी से पकड़ में नहीं आती वह सहज ही मेरे यंत्र की पकड़ में आ जाती है। बचपन से ही, ५/६ साल की उम्र से ही उस समझ की समझदारी पर चलते चलते मैंने विश्वप्रकृति के रहस्यों की गहराई तक पहुँचकर इस सृष्टि के अंतर्निहित रहस्य को देखा। कोटि कोटि वर्षों से इस महाविश्व के विभिन्न स्थानों पर अनेक बड़े बड़े महान इसके समाधान के लिए काम करते चले जा रहे हैं। वे सब विशाल विशाल महान हैं। सभी निरंतर काम कर रहे हैं। उस समाधान के पथ को सरल बनाने के लिए ही लगता है कुछ दिनों से यह जो कलम के पेड़ की बात मैं कर रहा हूँ, इस ओर देखते हुए ही प्रकृति की ओर से कलम के पेड़ का विचार आया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति मुझसे कहना चाह रही हो कि न केवल अपनी पूर्णता तक पहचुँ, बल्कि किसी और को भी उस पूर्णता के स्तर तक पहुँचा जाऊँ। प्रकृति की ओर से किसी को कलम का पेड़ बनाकर भेजे जाने पर उसको अगर मैं तैयार कर पाया तो उसके माध्यम से अनेकों उस आदिअन्तहीन विश्व के सुर को बड़ी आसानी से पा जाएंगे। क्योंकि, जिसे मैं तैयार करूँगा उसके माध्यम से तो मेरा ही विचार reflected होगा। मैं जो record लेकर आया हूँ उसे अखंड रखने के लिए मैं किसी ओर देख नहीं पा रहा हूँ। एकबार तैयार कर दे पाऊँ तब जो बहुत बड़े बड़े हो गए हैं उनके कार्य के क्षेत्र में यह कलम का पेड़ बहुत सुविधा प्रदान कर पाएगा। उनके अनेक वर्षों का परिश्रम बच जाएगा। पहाड़ों में अभी भी अनेक हैं जो ऐसे किसी की आशा में बैठे हुए हैं। मेरा वह संतान, जो कलम का पेड़ बनकर उनके पास जाएगा — यदि गया — वे उसको परम श्रद्धा से, परम प्रेम से ईश्वरज्ञान से गले लगाएँगे।

कालिदास- पहाड़ कहें तो क्या केवल हिमालय की ओर ही हैं या पृथ्वी पर अन्य कहीं भी ऐसे ऊँचे stage के साधक हैं?

श्रीश्रीठाकूर- हिमालय की ओर ही अधिक हैं, वहाँ एक अंचल ही है जहाँ वे रहते हैं।

कालिदास- तुम जिस बार गया गए थे वहाँ कहा था कि नर्मदा की ओर भी कुछ हैं।

श्रीश्रीठाकूर- कुछ हो सकते हैं, परन्तु हिमालय की तरह उतने ऊँचे नहीं हैं वे। जो जहाँ कहीं भी क्यों न हो मेरे उस कलम के पेड़ को अपने फायदे के लिए ढूंढ लेगा ।

कालिदास- कलम का पेड़ क्या फिर नर्मदा और हिमालय दोनों ही तरफ जाएगा?

श्रीश्रीठाकूर- मेरा कलम का पेड़ कहीं भी जाने के लिए बाध्य नहीं है, यदि वह खुश हुआ तभी वह जाएगा। वह अपने स्वयं की ख्याल और खुशी से चलेगा। यह ज़बरदस्ती करने वाली बात नहीं। वैसे जब सभी उसकी प्रतिक्षा में बैठे हुए हैं, तब उन सभी की आकुल व्याकुल पुकारों का वह प्रत्युत्तर देगा ऐसा आशा तो किया जा सकता है। वह हिमालय भी हो सकता है और कालिदास ने जो नर्मदा की बात कही वह भी हो सकता है। वे उनके व्यक्तिगत आग्रह से ही उस कलम के पेड़ को ढूंढ लेंगे। तत्पश्चात् यदि मेरा वह कलम का पेड़ उनके ऊपर प्रसन्न होकर उनके पास जाए तब वह उसका व्यक्तिगत विषय है।

कालिदास- हम उसे देख नहीं पाएंगे?

श्रीश्रीठाकूर- मैंने तो पहले ही कहा है कि मेरा प्रयास रहेगा उसे छिपाकर रखने का। क्योंकि यहाँ का झगड़ा, विवाद, ईर्षा इन सब से जितना दूर रखा जाए उतना ही अच्छा। मेरा कलम का पेड़ इस विश्व का एक अमूल्य सम्पद होगा। यहाँ के साधारणों के ईर्षा से भी तो उसकी रक्षा करनी पड़ेगी। मेरे कलम के पेड़ को तैयार करते समय मैं स्वयं भी उसे यह समझने नहीं दूँगा कि वह कितने बड़े महामुल्यवान विषयवस्तु का मालिक होने वाला है। केवल दूर से नज़र रखता रहूँगा। कारण यही जो मैंने पहले ही कहा कि विश्व के उस आदितम सुर का संधान लेकर आएगा मेरा वह संतान जिसको मैं कलम के पेड़ के रूप में तैयार करूँगा, सकल समस्या का अति सहज समाधान पाने उसके पास विशाल विशाल महापुरुष आएँगे। तुम्हारे चिंताधारा की जो मात्रा है, उससे तुम सब इस पृथ्वि के अभाव, रोग, शोक से ज़्यादा कुछ नहीं सोच सकते। इसलिए तुम लोगों से जब बात करता हूँ यहाँ के समस्याओं को लेकर ही ज़्यादा बात करता हूँ, क्योंकि और भी ऊँचे भावना सभी बहुत ज़्यादा सोच नहीं पाते। किन्तु जो ऊँचे उठ गए हैं उनकी चिंता अन्य धारा में प्रवाहित होती है। वे इस सृष्टितत्व के रहस्य की साधना में डूबे हुए हैं, वह साधना का सुर वे मेरे कलम के पेड़ से जान लेंगे। इसलिए तुम उसे पहचान पाए कि नहीं यह बड़ी बात नहीं, जो बहुत ऊँचे उठ गए हैं — वे ही उसे ढूंढ लेंगे। तुम जैसे साधारणों में से जो या जो सब उसे पहचान पाएंगे, समझ पाएंगे वे विशेष भाग्यवान हैं, वे महाभाग्य के अधिकारी हैं ऐसा ही बोलना पड़ रहा है।

कालिदास- उस दिन धींरेन घोष बोल रहा था कि तुम्हारा कलम का पेड़ जो होगा वह शिवतुल्य होगा।

श्रीश्रीठाकूर कुछ क्षण चुप रहने के बाद बोले — इस विषय को लेकर बाहर ज़्यादा आलोचना न करना ही अच्छा है। इतना ही केवल बोल सकता हूँ कि इस पृथ्वी पर साधना करके जो बड़े हुए हैं, उन्होंने जहाँ खत्म किया है — मेरा वह संतान, मेरा वह कलम का पेड़ शुरु ही करेगा उससे भी बहुत ऊपर से। एक पिता ने कितना कष्ट करके एक घर बनाया, लेकिन उसका संतान जब व्यवसाय शुरु करता है वह पिता के इस संपत्ति का

उत्तराधिकार प्राप्त करके ही शुरू करता है। समझ पाए? हो सकता है तुम्हारा एक दिन कुछ भी नहीं था, खूब गरीबी में दिन बिताया हो। उसके बाद खूब कष्ट करके, परिश्रम करके, एक दुकान बनाया, एक घर बनाया। तुम्हारे संतान ने जब व्यवसाय में हाथ लगाया उसको तो उतना कष्ट करके शुरु नहीं करना पड़ा। शुरू से ही उसे एक तैयार घर मिला, तैयार दुकान मिला। यहाँ भी कुछ वैसा ही है। मेरा आध्यात्मिक उत्तराधिकारी तो मेरा संतान ही होगा। इसलिए कलम का पेड़ बनकर जो आएगा उसका मुल्य असीम है। मेरा वह संतान जो कलम का पेड़ बनकर आएगा उसको प्यार करके ना जाने कितने लोग मेरे पास पहुँच जाएँगे यह भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अनेकों उसकी आशा में बैठे हैं।

राम नारायण राम

তাঁর চোখের মণি বাবনের শুভ জন্মদিন উদ্‌যাপনে শ্রী শ্রী ঠাকুর

155, Park Street

30.09.1967

3.00 p.m.

श्रीश्रीठाकुर अपने कमरे में बैठे थे, कालिदास किसी से फोन पर बात करके सामने खड़े होने पर श्रीश्रीठाकुर ने कालिदास की ओर देखकर पूछा कि फोन कब ठीक हुआ।

कालिदास- यही कुछ एक घंटा पहले।

श्रीश्रीठाकुर- माँ तो कल आकर पूछ रही थी कि फोन कब ठीक होगा। गौरीशंकर को श्यामबाज़ार में फोन करके यह सूचित करने बोल देना।

कालिदास- रेवादी ने फोन करके यह जानना चाहा कि कल क्लास होगा कि नहीं। मैंने बोला कि ठाकूर की तबीयत ठीक नहीं, फिलहाल कुछ नहीं बोला जा सकता।

श्रीश्रीठाकुर कुछ देर तक चुप रहे फिर कुसुमदी को बुलाने को कहा और पूछा — अनिल सेन क्या आया है?

(एकजन पहली मंजिल से खबर लेकर आया कि अनिल सेन अभी तक आकर नहीं पहुँचा।)

श्रीश्रीठाकुर- अनिल सेन आते ही उसे ऊपर भेज देना। (फिर कुछ देर तक चुप रहे।) हरीश क्या खाकर गया है? (रसोई से खबर लेकर यह पता चला कि हरीश खाकर गया है।)

श्रीश्रीठाकुर- यह हरीश कितने छुटपन में मेरे पास आता था। हम जहाँ रहते थे वही कृष्णनगर के पड़ोस में कालमीना नामक एक जगह में वो रहता था। उसके एक ज्येठा (पिता के बड़े भाई) का उजानचर के हाट में एक कपड़ों का दुकान था। मेरे पिता, उसके बाद मास्टर प्रकाश बल, तथा उस कचहरी के विषेश्वर घोष ये सभी शाम को कभी कभी उसके ज्येठा के दुकान पर बैठकर गप्पे मारते थे। एकबार उसके मौसी की या बुआ की बेटी को साँप ने काँटा था, मेरे पास लेकर आए थे। हरीश अच्छा फुटबॉल खेलता था। बांछारामपुर में एकबार फुटबॉल टूर्नामेंट में बहुत अच्छा खेला था। एकबार रात को बारीश के कारण वह घर नहीं लौट पाया, हमारे घर पर ही रुक गया, माँ ने खूब जतन से खाना पकाकर उसको खिलाया। उस दिन मछली नहीं पका था, इसलिए हाइरा को बुलाकर माँ ने मछली मंगवाकर खाना पकाया। रात को वह मेरे बाँस के घर में सोया था। मैं तो काम पर बैठा था, वह कुछ दूरी पर सो रहा था। मनाई फ़कीर तब गहरी रात को मेरे पास आता था। मनाई फ़कीर लोगों के भीड़ में आना नहीं चाहता था, इसलिए रात को आता था। मनाई फ़कीर घर में घुसकर उसे सोता देखकर थोड़ा हैरान हो गया। उसके बाद काम पर बैठ गया।

कालिदास- मनाई फ़कीर कितने दिन इस प्रकार तुम्हारे इतने करीब था?

श्रीश्रीठाकुर- काफी दिन था, फिर मैंने ही उसे भेज दिया।

कालिदास- तुम तो उस दिन मनाई फ़कीर का गाना कितना सुन्दर गा रहे थे।

श्रीश्रीठाकुर- मनाई फ़कीर बहुत अच्छा गाता था। मैं उसकी तरह नहीं गा पाया, थोड़ा बहुत गाया। वह तो अफताबुद्दीन, अलाउद्दीन, फिर यह जो बहादुर खाँ आता है, बहादुर के पिता आयेत अली — इन सबका गुरु था। मनाई फ़कीर बहुत बड़ा साधक था । मुझे केवल बोलता था, ऐ बच्चा, मेरा आज्ञाचक्र फोड़ दे।

कालिदास- अच्छा ठाकूर, मैं एक प्रश्न पूछूँ? यह जो कई दिनों से तुम कलम के पेड़ की बात बोल रहे हो क्या वे मनाई फ़कीर से भी बड़े होंगे?

श्रीश्रीठाकुर- आलोचना तो अन्य प्रसंग पर हो रहा था, यह तो अन्य प्रसंग पर चला गया।

कालिदास- ऐसे ही मन में आया इसलिए पूछ लिया।

श्रीश्रीठाकुर- इस प्रसंग पर आलोचना न करना ही अच्छा है। प्रकृति की ओर से जिस विषयवस्तु को छिपाकर रखा गया है उसे छिपा रहने देना ही उचित है। यह सब बात बाहर आलोचना करनेवाला नहीं। निकट हो इसलिए दो एक बात बोलता हूँ। यह तुम्हारे जाननेवाला भी विषय नहीं, मेरे बतानेवाला भी विषय नहीं।

कालिदास- तुम न चाहो तो बोलने की आवश्यकता नहीं।

कुसुमदी- बोलो न ठाकुर।

श्रीश्रीठाकुर ने कुसुमदी की ओर देखा और जानना चाहा कि रात को रायदा शिवपुर से आएँगे यह कुसुम जानती है कि नहीं। कुसुमदी बोली कि वह रायदा के आने के विषय में जानती हैं और फिर से पूछा कलम के पेड़ के विषय में कुछ बोलने के लिए।

श्रीश्रीठाकुर- मेरा कलम का पेड़ विश्वप्रकृति के एक आश्चर्य कार्य के लिए आ रहा है। यह आज की बात नहीं है। अनेक दिनों, अनेक सोच विचारों का एक अंतिम परिणाम है यह कलम का पेड़। यहाँ जिन क्षमताओं का परिचय तुम पा रहे हो, वह किसी न किसी प्रकार अर्जन करना पड़ता है। क्षमताओं के भी देखो कितने प्रकार हैं। मान लो कोई अपने मन ही मन व्यायाम करता जा रहा है, इस तरह करते करते वह बहुत शक्तिशाली बन गया। या मान लो व्यवसाय करके बहुत पैसा कमाया और बहुत अमीर हो गया। यह एक प्रकार की क्षमता है। अब एक अन्य प्रकार की क्षमता, जैसे राजनैतिक क्षमता, यह अब केवल तुम्हारे अकेले की इच्छा पर निर्भर नहीं बल्कि अनेक लोगों की सहमति भी यहाँ आवश्यक है। व्यायाम तुम घर के कोने में अकेले अकेले कर सकते हो, कौन तुमको कैसे देख रहा है वह सोचने की यहाँ ज़रुरत नहीं। कोई तुमको पसंद करता है, या कोई नहीं करता इसके आधार पर तुम्हारे व्यायाम करके क्षमता लाभ को कोई भी रोक नहीं पाएगा। परन्तु राजनैतिक क्षमता तुम तभी पाओगे जब अधिकांश लोग तुम्हारा समर्थन करेंगे। जैसे मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री जो बनते हैं — यहाँ केवल तुम्हारे अकेले के इच्छा से नहीं होगा, majority का support मिलने से तभी तुम बन पाओगे। इस विश्व का जो spiritual power है वहाँ भी बहुत हद तक ऐसा ही है। एक समूह है साधकों का, वे साधना के द्वारा बहुत बड़े बड़े हो रहे हैं, यह मानो कि देवता बन जा रहे हैं। लेकिन जो और भी बड़े बड़े हो गए हैं, वे विशाल विशाल पुरुष हो गए हैं, फिर उनके बीच में निर्वाचन के माध्यम से यह निर्णय किया जाता है कि कौन श्रेष्ठ है। अब अगर यह पता चले कि एक साथ कई लोग एक ही स्तर के हो गए हैं, तब दोबारा उन्हें अपने record का परीक्षा देने के लिए देह लेकर जन्मग्रहण करना पड़ता है। जैसे भी क्यों न हो, जो जितना भी बड़ा क्यों न हो उसको क्षमता अर्जन करना होता है। लेकिन इस विश्वसृष्टि के अंतिम परिणती के बारे में विचार करके ऐसे किसी एक व्यक्ति की बात सोची गई जिसे कुछ भी कभी भी हासिल न करना पड़े। इस चिन्ता से ही कलम के पेड़ का विचार आया। इसलिए वह सबके ऊपर रहेगा, सब कानून के ऊपर रहेगा। जैसे यह जो दुर्गापूजा में महालया का जो पाठ है वहाँ ऐसा कुछ है ना, कि दुर्गा को इस देवता ने यह दिया, उस देवता ने वह दिया — इन सबसे सबके श्रेष्ठ

चीजों से दूर्गा को तैयार किया गया। जिस प्रकार यह हुआ, उसे तो कोई साधना करके कुछ भी हासिल करना नहीं पड़ा, उसे सबका श्रेष्ठ चीज़ मिला। क्योंकि जो काम अलग अलग होकर करना संभव नहीं हो रहा था, वह एकजुट हुआ और उन सबकी सम्मिलित शक्ति एक रूप लेकर खड़ी हो गयी। मेरा कलम का पेड़ भी वैसा ही होगा। क्या अब तुम्हें कुछ समझ में आया?

कालिदास- क्या वह मनुष्य का रूप लेकर आएगा?

श्रीश्रीठाकुर- हाँ खोल तो मनुष्य का ही होता है, इसके बाद जैसे जैसे दिन गुज़रेगा वह अपने आप तैयार होता रहेगा। वह इसी रूप को धारण करने के लिए जन्म लेगा।

कालिदास- हम उसे नहीं देख पाएंगे?

श्रीश्रीठाकुर- यह मैं कैसे बोलूँ। पहले ही तो बोला प्रकृति के कितने बड़े उद्देश्य के लिए वह आ रहा है यह तुम लोग अब कल्पना में भी नहीं ला सकते। इसी परिवेश के बीच में वह रहेगा, किन्तु यह परिवेश सोच में इतना पिछड़ा हुआ है कि अन्य परिवेश से उसे यहाँ ले आने का ख्याल चला आता है।

कालिदास- मैं ठीक समझ नहीं पाया।

श्रीश्रीठाकुर- तुम सब जो आए हो, कहाँ से आए हो? तुम लोग तो बोलते हो कि सूर्य के औरस से पृथ्वि माँ के गर्भ में तुम्हारा जन्म हुआ है। तो फिर जितने दिनों से सूर्य आया, उसके बाद पृथ्वि आई — तुम सब इस वातावरण में पैदा हुए — उसके बाद से एकबार जन्मग्रहण कर रहे हो, उसके बाद मर रहे हो — फिर जन्म ले रहे हो, फिर मर रहे हो — सिर्फ यही चल रहा है करोड़ों करोड़ों सालों से, ऐसा ही और कितने करोड़ों सालों तक चलता कौन जाने। बीच रास्ते में मेरे साथ भेंट हो जाने के कारण मैं यह कोशिश कर रहा हूँ किस प्रकार तुम लोगों को इस चक्र से बाहर ले जाया जाय। इसका क्या अर्थ निकला — यह वातावरण व्यर्थता का वातावरण बन गया है। सफलता प्राप्त करने का सब उपादान रहते हुए भी इस परिवेश के प्रभाव से मुक्त न हो पाने के कारण तुम लोग कभी भी सफल नहीं हो पा रहे हो। जन्म से मृत्यु तक असली विषयवस्तु को भूलकर एकदम नकल के पीछे दौड़ दौड़ कर मर रहे हो। इसलिए जो परिवेश व्यर्थता का है, उस परिवेश में कलम का पेड़ बनकर जो आएगा ताकि उस पर इस परिवेश का कोई भी प्रभाव न पड़े इसलिए तुम लोग जिस प्रकार सूर्य के औरस से पृथ्वि के गर्भ में जो आए हो उस प्रकार उसे आना न पड़े इस प्रकार का विचार भी किया गया है। मानों, बातों की बात बोल रहा हूँ, बहुत दूर के, अनेक दूर के किसी विशाल बड़े सूर्य से, जो सूर्य सफलता का सूर्य हो — वैसे किसी सूर्य से वह आए। जानते हो यह जो धूमकेतु आते हैं वे कितने दूर दूर से होते हुए आते हैं? ऐसा कह रहा हूँ इसलिए ऐसा ही होना होगा, इसका कोई मतलब नहीं। मैं केवल यही कह रहा हूँ कि ऐसी आलोचना विशाल विशाल पुरुष — जिनके प्रार्थना से कलम का पेड़ आएगा — उनके बीच इस प्रकार की आलोचना भी हुई है। उन्होंने ही मुझे कलम के पेड़ को तैयार करने का अनुरोध किया है। उसी के माध्यम से मेरा प्रकाश उन तक पहुँच जाएगा।

कालिदास- तब तो कलम का पेड़ सभी देव देवियों के ऊपर है।

श्रीश्रीठाकुर- देव देवी तो सब साधना करके ही बने हैं। और दुर्गा जिस प्रकार सभी देव देवीयों के श्रेष्ठ वस्तुओं को लेकर बनी है, मेरा कलम का पेड़ भी ठीक उसी तरह बनेगा। उसे तो मेरा भी सब कुछ प्राप्त होगा।

कालिदास- तुमने तो कलम के पेड़ को एकदम ही ऊँचे स्थान पर, एकदम तुम्हारे स्थान पर बिठा दिया है।

श्रीश्रीठाकुर- बड़ा स्थान, छोटा स्थान का कोई विषय नहीं है यह। काम पूरा हो जाए बस इतना ही ज़रूरी है। मानो किसी के पिता उस पार बंगाल से अपना सब कुछ खोकर शरणार्थी के रूप में इस पार बंगाल में आए। उसके बाद बहुत कष्ट किया, सियालदह स्टेशन में मुटेगिरी किया, फिर गमछा बेचा — यह सब करके, बहुत मेहनत करके पैसा कमाकर एकदिन एक मंज़िल का घर बनाया। अब उसका बेटा तो जन्म से ही उस मकान का मालिक बन गया। बेटे को क्या एकदम शुरुवात से, उस पार बंगाल से लेकर उसके पिता ने जो जो किया था वह सब करना पड़ेगा? वह तो जन्म के साथ साथ अपने पिता द्वारा तैयार किये गए मकान का उत्तराधिकारी बन गया। अब वह जब मकान पर हाथ डालेगा तो वह दूसरी मंज़िल से ही शुरू करेगा। अर्थात् उसके पिता ने जहाँ समाप्त किया, बेटा वहीं से शुरू करेगा। इसी प्रकार तो प्रत्येक परिवार बड़ा हो उठता है।

कालिदास- वह कब आएगा, तुम क्या थोड़ा बता नहीं सकते?

श्रीश्रीठाकुर- यह मेरे देखने की बात नहीं। क्योंकि विश्वप्रकृति की ओर से अनन्त शक्ति का उत्तराधिकारी बनकर वह आएगा। उसके आने का एक ही उद्देश्य है — अनन्त सृष्टि के महान सफलता का अन्तिम जो फल है — उसकी ओर निर्देश करना। एक ओर मेरा रिकार्ड चल रहा है, दूसरी ओर उसको तैयार करने का दायित्व है। इसलिए उसे छिपाकर रखना ही होगा। मगर उसके भुमिष्ठ होने की वार्ता आ रही है। मैं विश्वप्रकृति के इशारों के अनुसार जितना संभव हो सके उतना उसे छिपाकर रखना चाहूँगा। उसे यह जानने नहीं दिया जा सकता कि वह क्या बनने वाला है। जिस प्रकार उसे यह जानने नहीं दिया जा सकता वह कौन है, उसी प्रकार दूसरों को भी यह जानने नहीं दिया जाएगा। क्योंकि इससे कार्य के पथ पर, तैयार करने के पथ पर विघ्न आ सकता है। मगर कोई अगर उसे पहचान सके तो उस परिस्थिती में कुछ बोलने का नहीं। तथापि उसे बहुत सावधानी से रखना पड़ेगा। क्योंकि तुम सब के रोग शोक जैसे मैं ठीक कर देता हूँ मगर स्वयं के लिए अगर कुछ भी करने जाऊँ तो मेरे record में spot पड़ जाएगा। मेरा कलम का पेड़ बनकर जो आएगा, क्योंकि वह मेरा ही एक अंश होगा इसलिए उसके क्षेत्र में भी ऐसा ही होगा, अर्थात् उसके किसी भी बिमारी में मैं अगर हस्तक्षेप करूँगा तो उसके लिए भी मेरे record में spot पड़ जाएगा। इसलिए उसको इतनी ज़्यादा सावधानीपूर्वक रखना होगा।

कालिदास- मेरी बहुत इच्छा है कि मैं उसे देख पाऊँ।

श्रीश्रीठाकुर- तुममें से कौन कौन उससे मिल पाओगे यह मैं नहीं जानता। मगर जो उसे पहचान लेने में सक्षम होंगे वे कितने बड़े महाभाग्य के अधिकारी होंगे यह वे स्वयं भी अपनी कल्पना में ला नहीं सकते। यहाँ कहा जाता है कि देवदर्शन से सिद्धी मुक्ति सब मिलता है, और देवता स्वयं जिसे भेज रहे हैं, देवता जिसे पूजा करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं उसके दर्शन से क्या हो सकता है और क्या नहीं वह कल्पना में भी नहीं ला पाओगे। उसकी बात सोचने से मेरी आँखें भी भर आती हैं, मैं भी उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। पता नहीं कब उससे मिल पाऊँगा। यहाँ के किसी भी कानून से उसे बाँधा नहीं जा सकता, किसी भी कानून का प्रभाव उस पर नहीं पड़ेगा। उस शिशुकाल से कितने कठिन कानून के मध्य से मुझे चलना पड़ा है, मगर उसके ऊपर किसी भी कानून की खबरदारी नहीं चलेगी। कानून के पथ पर चलने से बहुत कुछ करना संभव नहीं हो पाता, उस परिस्तिथि में

उसकी इच्छा ही कानून के रूप में कार्यान्वित होगी। देही जगत, विदेही जगत और भी जो सब जगत हैं — सभी जगत में उसकी इच्छा ही कानून के रूप में स्थापित रहेगी। वहाँ किसी भी तर्क का कोई भी स्थान नहीं है। क्योंकि तर्क जो करने में समर्थ हैं वे ही उसे यहाँ भेज रहे हैं। इसलिए उसके साथ कोई भी तर्क वितर्क कदापि संभव नहीं। वह एक मासूम बच्चे की तरह अपनी मस्ती में इस पृथ्वी के पथ पथ पर चलता फिरेगा, खेलता फिरेगा, जिस पथ से वह गुज़रेगा, उसके चले जाने के बाद उस पथ के धुल को प्रणाम करके देवतागण भी धन्य हो जाएँगे। (इस समय श्रीश्रीठाकुर की माँ और मौसी श्रीश्रीठाकुर से मिलने उपस्थित हुए इस कारण वार्तालाप समाप्त हो गया।)

राम नारायण राम

155, Park Street

7-11-1967

3.00 p.m.

ठाकूर आज सुबह से समाधिमग्न थे। शाम के तीन बजे ठाकूर की समाधि भंग हुई। उसके बाद लगभग पाँच मिनिट लगातार गुरुगंभीर कंठ में वेद मंत्र उच्चारण करने के बाद ठाकुर ने यह संक्षिप्त वार्तालाप किया था।

:: वेदमंत्र :: अनेक वर्षों बाद जिस प्रकार एक ग्रह के साथ और एक ग्रह का संपर्क होता है, उसी प्रकार एक विराट शुभ इच्छाशक्ति अनेक सहस्र वर्षों से आकाशपथ पर निरंतर घूमती चली जा रही है। उस इच्छाशक्ति को मानों मधुमक्खी के छत्ते की तरह पृथ्वी के सीने पर छत्ता बनाने के लिए तैयार होते देखा जा रहा है। हालंकी यह बात एक कल्पना जैसी प्रतीत हो रही है, किन्तु यह कल्पना नहीं। फूल की महक बहुत दूर से ही मिल जाती है, लेकिन वह कल्पना नहीं। जिस प्रकार बहुत दूर की ध्वनि रेडियो के यंत्र से पकड़ में आता है, उसी प्रकार प्रकृति की एक शुभ इच्छाशक्ति मन के यंत्र में संकेत दे रही है। मैं उस आगमन का शब्द सुन रहा हूँ। आज षष्ठी तिथि है, षष्ठी पूजा है, हमारे गांव के पैतृक घर में कार्तिक महीने के इस षष्ठी तिथि के दिन को बहुत शुभ माना जाता आ रहा है। मेरे अन्य सब भाई बहन, उन सबका जन्म मेरे मामा के घर दोगाछी में हुआ था। केवल मेरा जन्म मेरे पिता ताऊ के घर, मेदिनिमंडल में हुआ। मेरी माँ जब गर्भवती थीं, मेरी दादी चाहती थीं कि बच्चा लड़का हो और उसका जन्म षष्ठी तिथि पर हो। लेकिन षष्ठी से पहले ही, कालीपूजा के दिन मेरा जन्म हुआ था। आज वो सब बातें याद आ रही है। आज का दिन भी तो षष्ठी तिथि है, साथ ही मंगलवार भी है, उसके ऊपर सूर्यपूजा का दिन भी, बहुत ही शुभ है। (प्रोफेसर पी. के राय ने कहा, बंगला तिथि के अनुसार आज २३ कार्तिक है, तुम्हारा जन्मदिन है।)

ठाकूर आँख बंद करके बैठे हुए हैं। दोनों आँखों से पानी बह रहा है। सामने धीरेनज्योति उपस्थित है। (इस क्लास का लिखित मूल अंश धीरेनज्योति शास्त्री से ही प्राप्त हुआ है।) उसने जानना चाहा कि ठाकूर की जो दादी हैं उनका नाम क्या राजलक्ष्मी देवी है?

प्रोफेसर पी. के. राय ने उत्तर दिया, नहीं, राजलक्ष्मी देवी ठाकूर की नानी हैं। ठाकूर की दादी शशिमुखी देवी हैं।

थोड़ी देर बाद ठाकुर ने अपनी आँखें खोली और बोले :: वेदमन्त्रः ः आज सूर्य पूजा है, सूर्य विश्व के तेज का प्रतीक है, उस परम तेज को स्मरण कर रहा हूँ, उनको हमारा श्रद्धा ज्ञापन कर रहा हूँ। वह परम तेज नये रोशनी का संधान लेकर आया है, उनकी रोशनी में नये पथ का सृष्टि हो। जिस रहस्य का समाधान आज भी नहीं हुआ, सृष्टि के उस अंतिम रहस्य का अंतिम समाधान उनके स्पर्श से ही हो यही मैं चाहता हूँ। सृष्टि के अंतिम परिणति के चरम समाधान की चाबी हाथ में लेकर ही उनका आगमन हुआ है। अनेकों उनके लिए इंतज़ार कर

रहे हैं क्योंकि वे सब नियमों के बाहर से आए हैं। कुछ देर पहले जिस इच्छाशक्ति के छत्ता बनाने वाली बात का उल्लेख किया गया, ऐसा लगता है कि वह भी उनके ही कारण से इस पृथ्वी पर जमकर एक ठोस आकार लेना चाह रही है। जो चेतना के अति सूक्ष्म अवस्था में चले गए हैं, जो देवताओं के भी पहुँच से बाहर हैं, वे सकल उच्चतम महान भी उनके लिए अधीर आग्रह से इंतज़ार कर रहे हैं, क्योंकि किसी भी नियम के बंधन में वह बंधा नहीं है, वह सकल नियमों के ऊपर है। :: वेदमंत्र ::

उनकी थोड़ी सी खुशी से बहुत जटिल पथ भी क्षणभर में सहज हो जाएगा। विश्व में प्रगति का मार्ग जो अब तक इतना कठिन था, वह पथ उनकी ही इच्छा से बहुत आसान हो जाएगा। हज़ार हज़ार, लाख लाख जन्मों का जो कार्य है वह उनकी इच्छा से, उनकी खुशी से एक जन्म में ही समाधान हो जाएगा। अनंत विश्व के सृष्टितत्व के सबसे जटिल और कठिन समस्या का समाधान एवं हल करने की क्षमता लेकर उनका आगमन हुआ। सिद्धि मुक्ति मोक्ष निर्वाण यह सब तो अति सामान्य विषय है, इससे बहुत ज़्यादा, और भी बहुत बड़ा कुछ उनसे प्राप्त किया जा सकता है। विश्व की कोई भी परिस्थिति अपनी खुशी से अपने नियंत्रण में वह ला पाएगा, इसके लिए किसी के सामने उनको जवाबदेही नहीं करनी पड़ेगी।

कुछ क्षण आँखें बंद करके रहने के बाद ठाकुर ने पूछा — कालिदास कहाँ है? प्रोफेसर पी. के. राय ने जवाब दिया, तुम्हारे मामा के घर पटलड़ांगा स्ट्रीट में आज कालिदास को जाना है, वहाँ से निवारणबाबू तथा अन्यों को लेकर श्यामबाज़ार के घर पर जाएगा, उसके बाद यहाँ आएगा। इसी समय कुसुमदी ने ठाकूर से कहा — सुबह से तुमने कुछ नहीं खाया है, पहले कुछ खा लो।

राम नारायण राम

শূন্যজ্যোতি